RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अप्रैल 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, अप्रैल 2021

चकमक

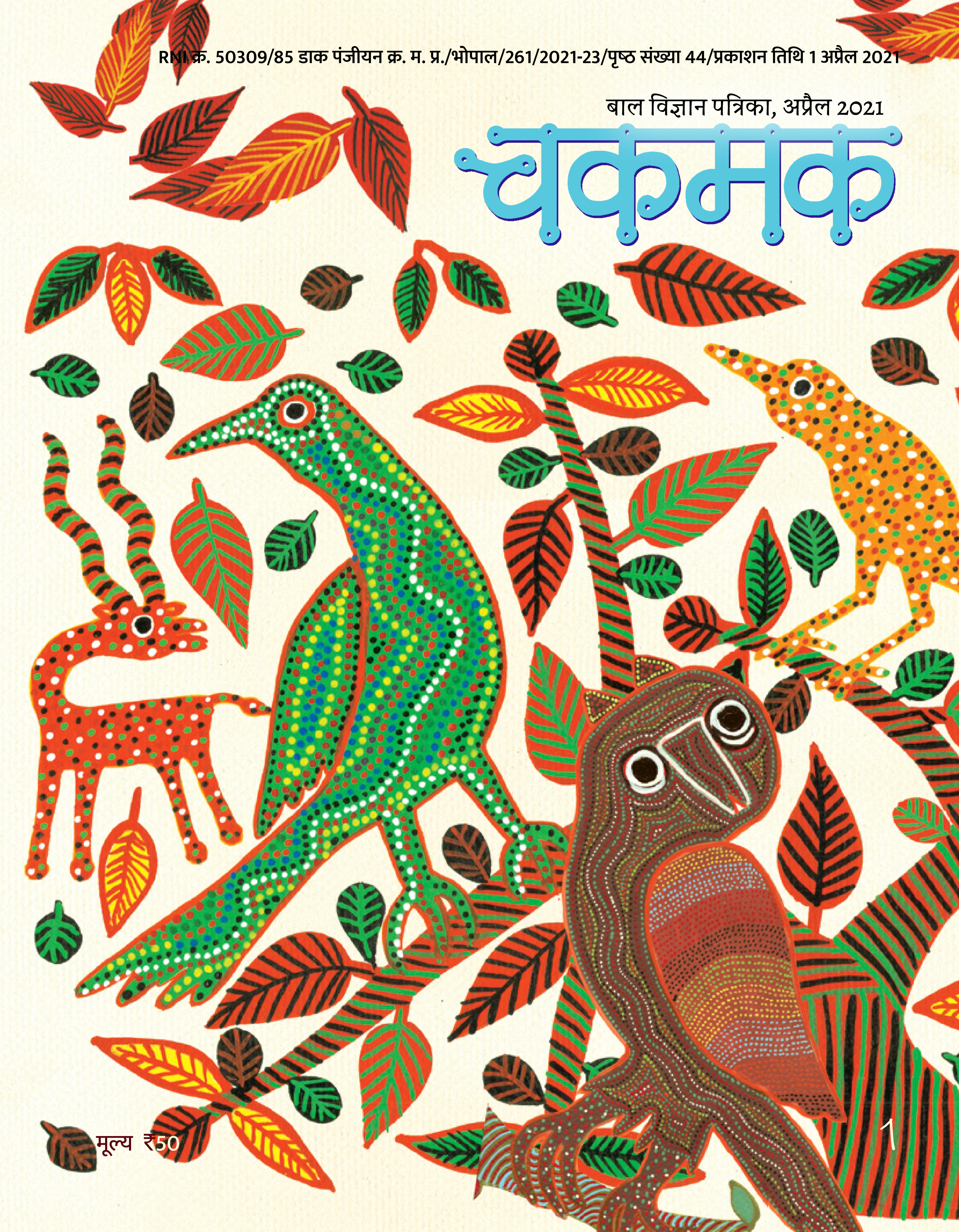

मूल्य ₹50

गर्मियाँ आते ही खलिहान अबाबील बच्चे पैदा करने हिमालय की ओर चले जाते हैं।

आम तौर पर जंगली जानवर इन्सानों से दूर रहना पसन्द करते हैं। लेकिन ये अबाबील अपना घोंसला हमारे आसपास ही बनाते हैं।

मन्दिरों, रेस्त्रां से लेकर घरों तक, हर किस्म की इमारत में तुम इनके बच्चों को देख सकते हो।

पहाड़ी लोगों ने ना सिर्फ इस बात से समझौता कर लिया है कि ये पक्षी उनके आसपास रहेंगे...

बल्कि इनकी इस बात से भी कि ये यहाँ-वहाँ बीट कर देते हैं!

खलिहान अबाबील

रोहन चक्रवर्ती

अंक 415 • अप्रैल 2021

चकमक

इस बार

खलिहान अबाबील – रोहन चक्रवर्ती – 2
तालाबन्दी में बचपन – लॉकडाउन के वक्त... – अंजलि – 4
भूलभुलैया – 7
दक्कन के दो काले पत्थर – अमन – 8
बड़ों का बचपन – दरार में पैदा हुआ... – तेजी ग्रोवर – 10
मज़े की बात है – राजेश उत्साही – 13
भूरीबाई चित्तरकाज – शम्पा शाह – 14
क्यों-क्यों – 18
म्यूज़िकल मैना – नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन – 22
संख्याविहीन लोग – 24
भविष्य में जीवों का रंग बदलेगा – 26
नज़मा स्कूल आई – चन्दन यादव – 28
तुम भी जानो – 31
मेरा पन्ना – 32
माथापच्ची – 38
चित्रपहेली – 40
कागज़ पर पेड़ – तनिष्का हतवलने – 43
छाया – विनोद पदरज – 44

आवरण चित्र: भूरीबाई

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

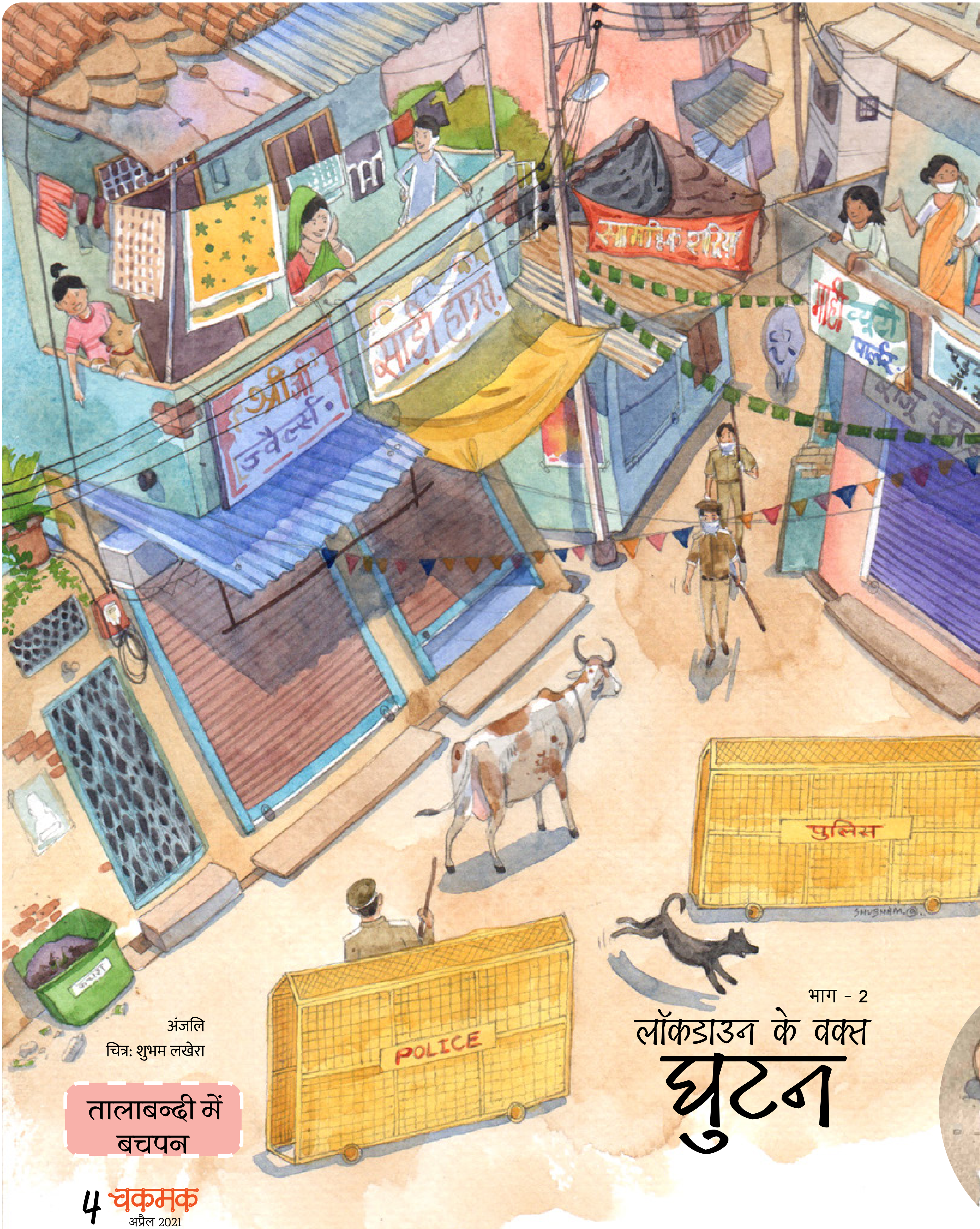

भाग - 2

लॉकडाउन के वक्त
घुटन

अंजलि
चित्र: शुभम लखेरा

तालाबन्दी में बचपन

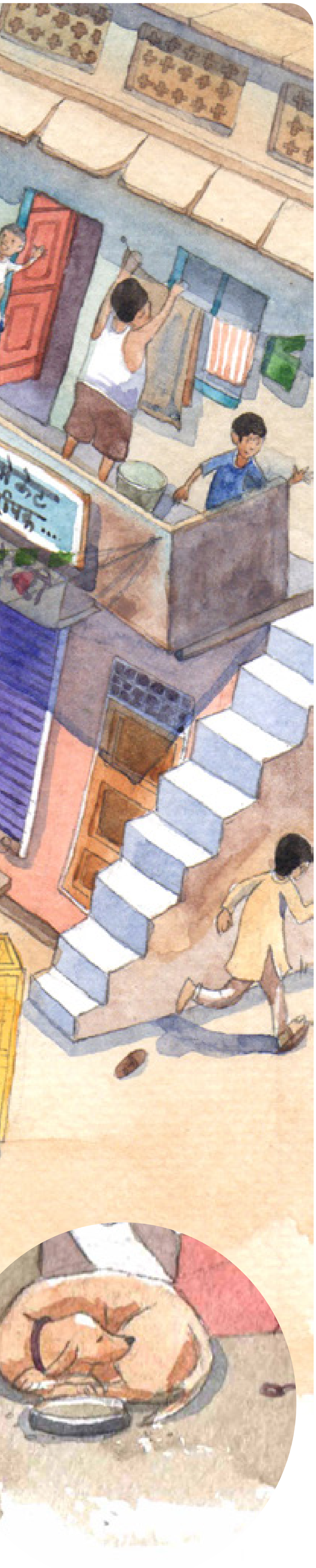

तालाबन्दी के चलते ज़िन्दगी परेशानी में कट रही थी। बाहर के शान्त माहौल को देखकर घर से बाहर निकलने को जी चाहता। घर में पड़े-पड़े चारदीवारी से बाहर निकलने की उत्सुकता चरम पर जा पहुँचती। ऐसा कोई दिन नहीं बीतता जब बाहर निकलने की न सोची हो। पर घरवालों ने कोरोना के डर से कड़े पहरे लगा रखे थे जिससे घर के बाहर एक कदम रखना भी सम्भव नहीं था। और, उधर दूसरी तरफ घर में दो मिनट बैठ रहना भी दूभर हो चला था। अब घर काटने को दौड़ता। जहाँ पहले लोग काम छोड़कर घर में बैठना पसन्द करते, वहीं अब अपना ही घर कैदखाना-सा लगने लगा था। अब तो हम सब यही सोचते कि जैसे ही यह तालाबन्दी खतम हो तो सबसे पहले नौकरी ढूँढ़कर बाहर रहने की कोशिश करें। जब से सबकी नौकरी छूटी तब से सभी बेबस-से हो रहे थे। घर का खर्च भी बड़ी मुश्किल से चल पा रहा था।

इतनी गर्मी में बिजली से चलती चीज़ें जैसे कूलर, फ्रिज़ भी खराब होने लगे। प्रिंस पंखा भी अब खराब हो गया था। इस गर्मी में पूरे दिन घर में हवा से बदन तप रहा होता। उमस तो बढ़ती ही जा रही थी। सबका एक साथ बैठना मुश्किल-सा हो गया। अब तो एक-दूसरे को देखकर अन्दर से चिढ़ भी होने लगी थी। इसी चिढ़ की वजह से कभी-कभार हम घर में एक-दूसरे से लड़ाई भी करने लग जाते। अक्सर यह समझ नहीं आता कि लड़ाई हुई क्यों है। ऊपर से इस छोटे पड़ते घर से कोई कहीं जाने की सोचे भी, तो नहीं जा सकता था। एक तो कोरोना का डर और दूसरा पुलिस का पहरा जो किसी को बिना काम के जाने तक नहीं देती। सड़ी गर्मी के दौरान घर में रहने की मजबूरी से मन में गुस्से-सा पलता रहता।

बिना पंखे के रातों को जाग-जागकर गुज़ारना पड़ता। जान-बूझकर एक-दूसरे से बात कर किसी को यह एहसास नहीं होने देते कि हमने कितनी रातें गर्मी में गुज़ारी हैं। अगर ज़्यादा गर्मी पड़ती तो हाथों से पंखे को घुमाकर गर्मी को कम करने की थोड़ी कोशिश भी हम ज़रूर कर लेते। और कई बार पूरी की पूरी रात बात करके ही गुज़ार देते। अक्सर हमारी बातों में कोरोना के डर की ही बातें होतीं। इस असहनीय गर्मी में एक ही खयाल आता कि जल्दी से पंखा ठीक हो, और चैन की एक रात सोया जा सके।

खराब पड़ी चीज़ों में पंखा ठीक करवाना ज़्यादा ज़रूरी था। लेकिन पैसे कम थे और खर्च बहुत ज़्यादा। पूरा खर्च उन्हीं पैसों से ही होना था, तो अगर थोड़े पैसे भी कम हो जाते तो खर्च चलाना मुश्किल हो जाता। इतने पैसे भी नहीं थे जो लम्बे समय तक चल जाएँ। इसके बावजूद पंखा ठीक करवाना ज़रूरी था ताकि थोड़ी ही सही, पर गर्मी से राहत तो मिले। इसलिए बिजली ठीक करवाने वाले को तो बुलाना ही था, पर कैसे बुलाती। क्योंकि उस वक्त वह भी तो घर में ही दुबका होगा, बाकी लोगों की तरह। शायद दुकान भी नहीं खोली होगी उसने। अगर बुलाया तो पता नहीं वह आएगा भी या नहीं! उसे भी तो सबकी तरह मन में एक डर-सा होगा ही कि कहीं बाहर जाने पर बीमारी न लग जाए? अपने घर वालों का खयाल भी तो रखना है।

गर्मी की वजह से शरीर पर दाने भी हो रहे थे। उनमें खुजली भी होने लगी थी। यही सोचते कि जल्दी से जल्दी कोई पंखा बनाने वाला मिल जाए तो सड़ी गर्मी से राहत मिले। उस समय तो बस एक-दो दुकानें ही खुली हुई थीं ताकि सभी लोगों को खाने का सामान मिल सके। और सामानों के दाम भी आसमान छू रहे थे। दस किलो आटा जो पहले 180 रुपए का मिलता था अब वही आटा 240 में मिलने लगा था। और तेल के दाम भी बहुत बढ़ चुके थे। सब्ज़ियों के दाम तो आसमान छू रहे थे। इस तालाबन्दी में मँहगाई ने दिन का चैन और रातों की नींद तक उड़ा रखी थी। बस यही सोचते रहते कि इस हाल में पंखे को ठीक कराने के पैसे कहाँ से जुटाए जाएँ। राशन के पैसे पंखा ठीक कराने में खर्च कर दिए तो खाना कहाँ से खाया जाएगा।

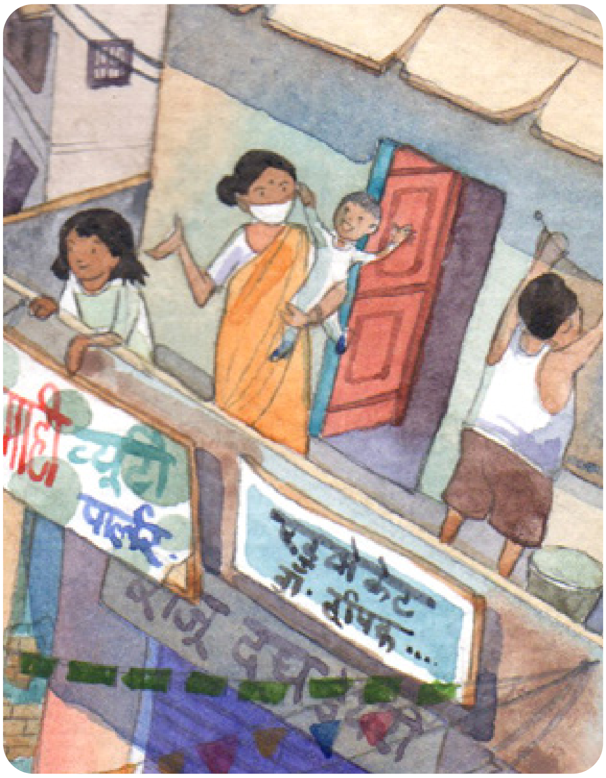

यह खयाल भी आता कि पंखा ठीक कराने में थोड़े पैसे चले जाएँगे लेकिन गर्मी से राहत तो मिलेगी। तभी घर के सामने ग्रिल पर कपड़े सुखा रही बबीता पूछने लगी, “क्या हो

रहा है! हमारा तो मन ही नहीं लग रहा। बस पड़े हैं घर में, ऊपर से टी.वी. का रिचार्ज भी खतम हो गया है। और किस्मत भी देखो फोन में जो पैसे डले हुए थे वो भी कल खतम हो जाएँगे। बस घर में बैठे बोर ही हो रहे हैं। पानी से अलग परेशान हैं। जब से पानी नहीं आया है तब से तो बड़ी परेशानी हो रही है। घर में कुछ भी नहीं हो पा रहा है। बर्तन कब से पड़े हैं और कपड़ों से तो पूरी मशीन लबालब भरी हुई है। और जब से गन्दा पानी आ रहा है तब से कोई पानी भर ही नहीं पा रहा है। और यह गन्दा पानी भी कभी आता है, कभी नहीं। इस वजह से रोज़ ही पानी की बड़ी वाली बोतल मँगवानी पड़ती है। इसमें भी रोज़ के पच्चीस रुपए खर्च हो ही जाते हैं।

ऊपर से रोज़ एक मास्क का खर्च, जो खतम ही नहीं होता क्योंकि हमें तो कपड़ों के मास्क बनाना आता ही नहीं है। पुलिस वाले मास्क के बगैर किसी को निकलने तक नहीं देते। एक मास्क को एक दिन से ज़्यादा लगाना मुश्किल है। रोज़ ही बदलना पड़ता है।"

कभी-कभी तो लगता कि इतने पैसे कहाँ से आएँगे। कब से इस घुटन में रह रहे हैं। घर में रहते हुए भी हम एक-दो बार बीमार हुए। खाँसी भी हुई तो डर के कारण पैसे दवाइयों में खर्च हुए। घर में बैठकर लोगों को कोई ना कोई बीमारी हो ही जाती है। इस कारण भी लोगों के पैसे खर्च हो ही रहे हैं। कुछ भी लाना हो खर्च तो होना ही है। मास्क पर खर्च होने से रोका भी नहीं जा सकता। घर में भी सोशल डिस्टेंसिंग के लिए जगह की कमी को मास्क लगाकर पूरी करने की कोशिशें जारी हैं।

अंजलि, सर्वोदय कन्या विद्यालय में नौवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह पिछले पाँच सालों से अंकुर संस्था से जुड़ी हैं। यह उनकी पहली प्रकाशित रचना है।

चित्र: शुभम लखेरा

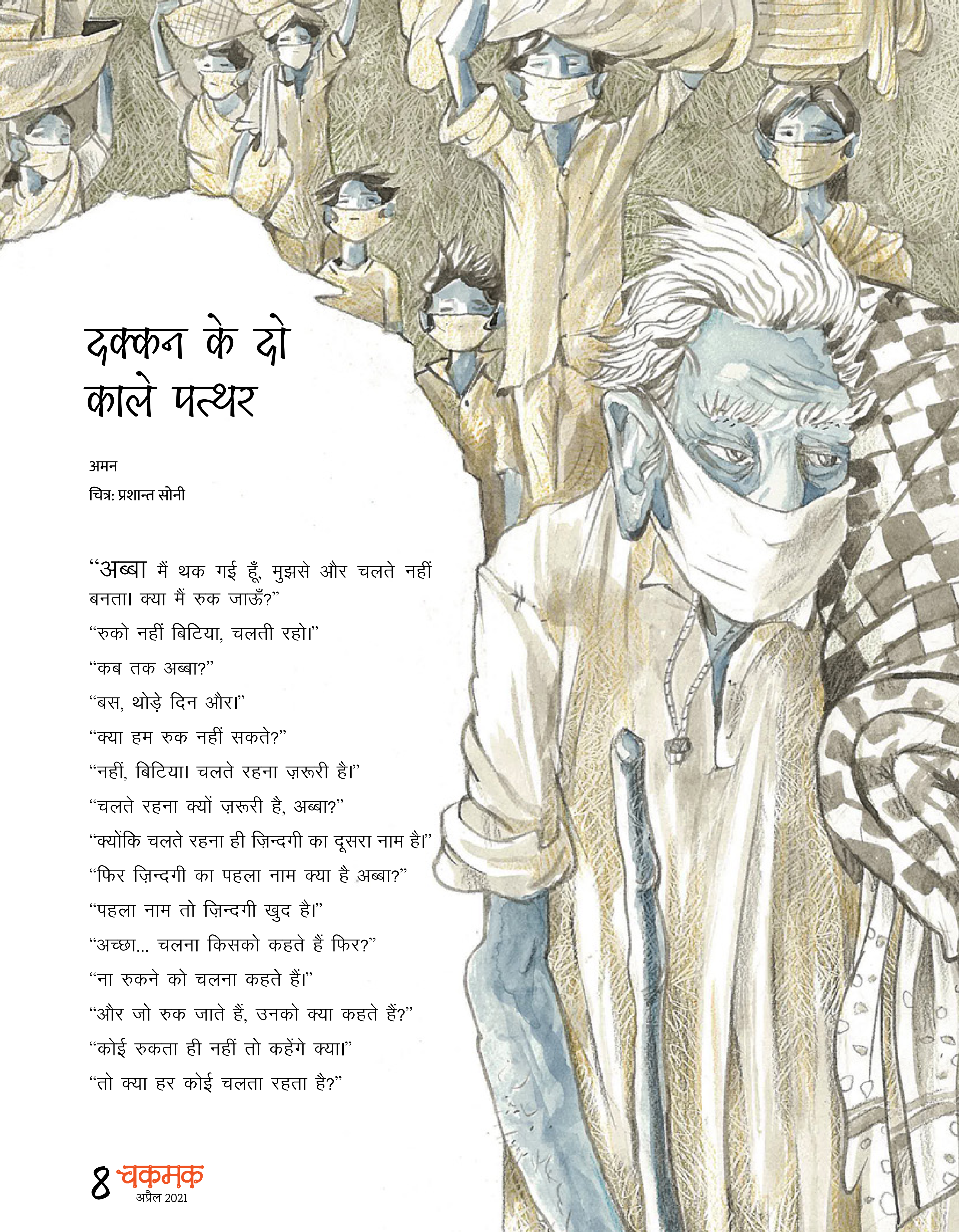

दक्कन के दो काले पत्थर

अमन

चित्र: प्रशान्त सोनी

“अब्बा मैं थक गई हूँ, मुझसे और चलते नहीं बनता। क्या मैं रुक जाऊँ?”

“रुको नहीं बिटिया, चलती रहो।”

“कब तक अब्बा?”

“बस, थोड़े दिन और।”

“क्या हम रुक नहीं सकते?”

“नहीं, बिटिया। चलते रहना ज़रूरी है।”

“चलते रहना क्यों ज़रूरी है, अब्बा?”

“क्योंकि चलते रहना ही ज़िन्दगी का दूसरा नाम है।”

“फिर ज़िन्दगी का पहला नाम क्या है अब्बा?”

“पहला नाम तो ज़िन्दगी खुद है।”

“अच्छा... चलना किसको कहते हैं फिर?”

“ना रुकने को चलना कहते हैं।”

“और जो रुक जाते हैं, उनको क्या कहते हैं?”

“कोई रुकता ही नहीं तो कहेंगे क्या।”

“तो क्या हर कोई चलता रहता है?”

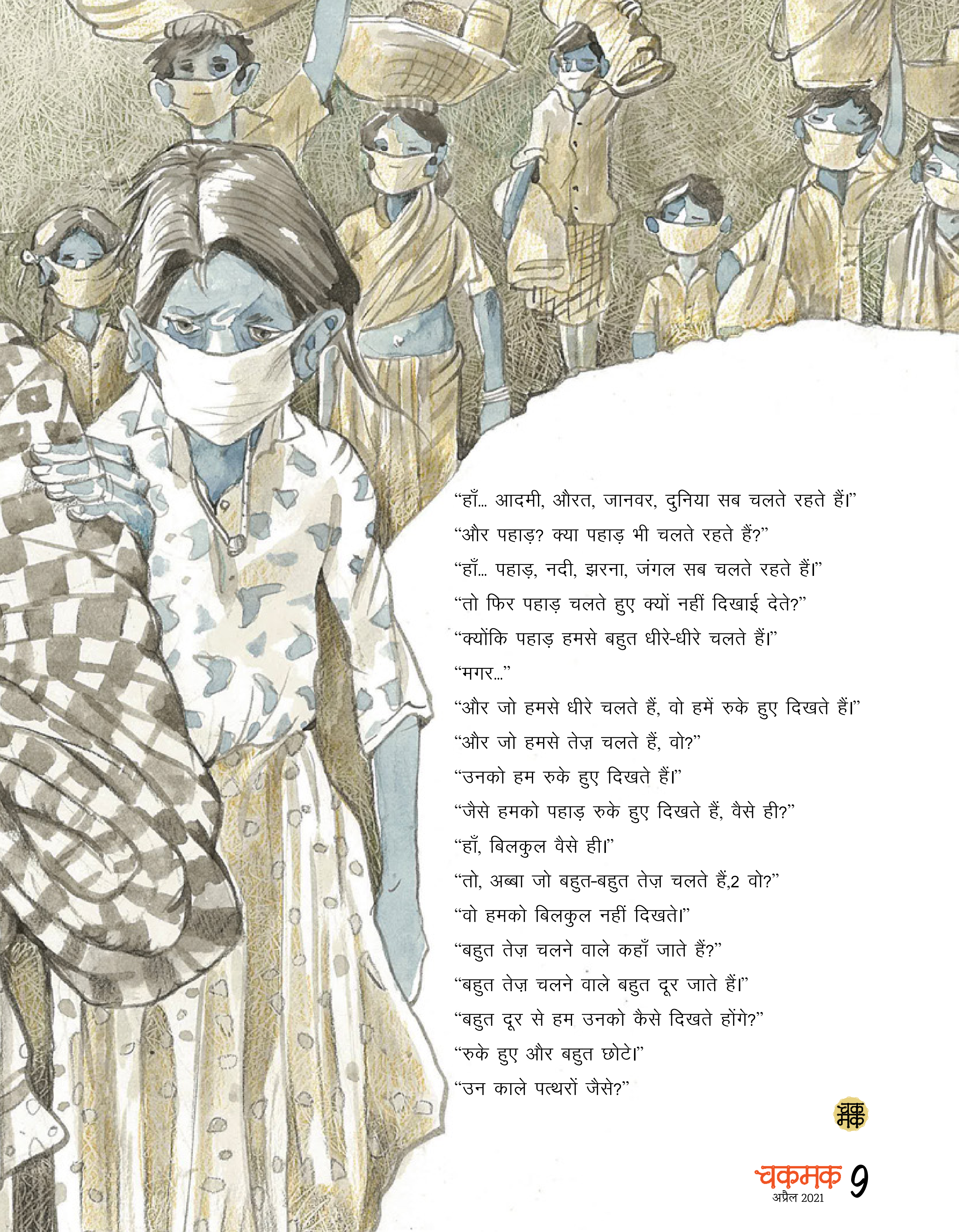

“हाँ... आदमी, औरत, जानवर, दुनिया सब चलते रहते हैं।”

“और पहाड़? क्या पहाड़ भी चलते रहते हैं?”

“हाँ... पहाड़, नदी, झरना, जंगल सब चलते रहते हैं।”

“तो फिर पहाड़ चलते हुए क्यों नहीं दिखाई देते?”

“क्योंकि पहाड़ हमसे बहुत धीरे-धीरे चलते हैं।”

“मगर...”

“और जो हमसे धीरे चलते हैं, वो हमें रुके हुए दिखते हैं।”

“और जो हमसे तेज़ चलते हैं, वो?”

“उनको हम रुके हुए दिखते हैं।”

“जैसे हमको पहाड़ रुके हुए दिखते हैं, वैसे ही?”

“हाँ, बिलकुल वैसे ही।”

“तो, अब्बा जो बहुत-बहुत तेज़ चलते हैं,2 वो?”

“वो हमको बिलकुल नहीं दिखते।”

“बहुत तेज़ चलने वाले कहाँ जाते हैं?”

“बहुत तेज़ चलने वाले बहुत दूर जाते हैं।”

“बहुत दूर से हम उनको कैसे दिखते होंगे?”

“रुके हुए और बहुत छोटे।”

“उन काले पत्थरों जैसे?”

दरार में पैदा हुआ बचपन

लेख व फोटो
तेजी ग्रोवर

मेरी नानी गुरबचन कौर (बीजी) और मेरा भाई गुरप्रीत सिंह।

हम्म फिर से किसी प्रिय व्यक्ति के कहने पर बचपन जैसी बीहड़ गलियों में जाना हो रहा है। बचपन ही मेरे जीवन का सबसे कठिन समय है, जो अब तक साथ चलता आ रहा है, क्योंकि वह ऐसा कम्बख्त है कि बड़ी उम्र में भी पीछा नहीं छोड़ रहा। कितना अजीब है कि जब कुछ लोग आपको बुजुर्ग समझने लग जाते हैं, आप तब भी अपने बचपन की गेंद से खेल रहे होते हैं। लेकिन यहाँ मैं कुछ और बात भी कहना चाहूँगी। मेरा बचपन पूरी तरह मेरे बचपन के दिनों में नहीं था। मेरा बचपन मुझे एक हद तक बड़े होने के बाद ही नसीब हुआ। मेरे लिए बड़े होना कोई बचपन का खेल नहीं था। हालाँकि बचपन के खेलों को जब बच्चे खेल रहे होते हैं उनके लिए उस समय भी ज़रूरी नहीं कि वे बचपन के खेल हों। जिन खेलों में हार-जीत रहती है उन्हें बच्चे तो क्या बड़े भी ठीक से नहीं खेल पाते। इस बात से मैं अपने बचपन की याद रही पारिवारिक कहानियों में एक और हार-जीत के बारे में एक बार फिर से सोचने लग गई। यह कोई खेल नहीं था और फिर यह भी समझ में नहीं आया कि कौन जीता और कौन हारा।

देश का विभाजन हुए अभी कुल आठ साल ही बीते थे। और बचपन में मुझे और मेरे भाई को विभाजन में हुए खून-खराबे की कहानियाँ खूब सुनने को मिलतीं। लेकिन मज़े की बात क्या थी? मेरे अब्बू कराची से अपनी जान बचाते हुए सीमा पार के शहर अमृतसर पहुँचने में सफल हुए थे। वे हम बच्चों को कई बार अलग-अलग ढंग से बताते थे कि सिर पर किताबों से भरी पेटी लादे, वे बँटे हुए देश में इस ओर कैसे आए। यह भी कि रास्ते में कहीं बाढ़ भी आई हुई थी। बढ़ते पानी से बचते-बचाते वे अचानक कई लोगों से घिर गए। उनका बचकर निकल पाना नामुमकिन था। लेकिन उन्होंने बड़े प्यार और इज़्ज़त से कुरान शरीफ की एक आयत पढ़कर उन उपद्रवी लोगों को समझाया कि कोई भी मज़हब हिंसा की इजाज़त नहीं देता। बस फिर क्या था। उस प्यार भरी आयत को एक सिख पगड़ीधारी के मुँह से सुनकर वे लोग इतने खुश हुए कि अब्बू को अपने घर ले गए। उन्होंने अब्बू की खूब खातिर की और खूब हिफाज़त से उन्हें तब तक रखे रहे जब तक खतरा टल नहीं गया। अब्बू जब भी यह कहानी हमें सुनाते, उस में कुछ न कुछ बदल गया होता। यह कहानी

बड़ों का बचपन

हर बार हमें नई कहानी की तरह जान पड़ती। बाद में बड़े होने पर मुझे थोड़ा बहुत समझ में आया कि हर बार कोई अच्छी कहानी दोबारा पढ़ने पर बिलकुल नई कैसे जान पड़ती है। मेरे लिए इस बात का खुलासा एक ऐसे लेखक की आत्मकथा ने किया जिसे मैं बार-बार याद करती हूँ। उस लेखक का नाम है एलियास कनेट्टी। वे लिखते हैं कि जब कोई व्यक्ति अपने जीवन या बचपन की कहानी सुनाते समय कुछ भी बदलाव न करे, हमेशा ठीक वैसा ही सुनाता रहे जैसा पिछली बार सुनाया था, तो उस आदमी का विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह सरासर झूठ बोल रहा होता है।

अब्बू अच्छे-से जानते थे कि बच्चों को विभाजन की कहानियाँ किस तरह सुनाई जानी चाहिए। उनके सबसे करीबी दोस्त मज़हब से ऊपर उठे हुए लोग थे। ज़्यादातर लेखक, शायर, कवि और अदीब। हमारे मन में मुसलमान का अर्थ था वे जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर हमारे अब्बू की जान बचाई थी। और उनके ज़्यादातर दोस्त भी उसी मज़हब के थे, भले ही वे मज़हब को मानने वाले लोग नहीं थे, जैसे अब्बू भी नहीं थे। अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर (दरबार साहिब) में वे दादी के कहने पर चले तो जाते थे लेकिन सरोवर का अमृत नहीं पीते थे, क्योंकि उसी में सब श्रद्धालु स्नान भी करते थे। मैं कई बार दादी के साथ तड़के-सवेरे पीतल के एक बहुत बड़े फूलदान में कई रंगों के फूल सजाए दरबार साहिब जाती थी। दादी की बड़ी इज़्ज़त थी वहाँ। उन्हें फूलों वाली बीबी के नाम से जाना जाता था। और मैं ठहरी उनकी पोती, तो मेरी शान भी कम न थी। एक शाम पहले पंजाबी के सुप्रसिद्ध कवि भाई वीर सिंह के घर से रजनीगन्धा, गुलाब और ग्लैडीओलस के फूल बड़ी-बड़ी मूँछों वाले माली ताऊ हमारे घर दे जाया करते थे। यह उन दिनों की बात है जब हमारी हालत ऐसी थी कि खाने को घर में कई दिन कुछ भी नहीं होता था। खास तौर से अब्बू-अम्मी की रसोई में। दादी-दादा की रसोई अलग थी और इसके कई कारण थे कि हमें उनकी रसोई से कुछ नहीं मिलता था। लेकिन जब दादी घर नहीं होतीं तो दादा झट-से हम बच्चों को नीचे बुलाकर पैकेट में से गेहूँ के मसालेदार फूले खाने को दिया करते। अगर दादी बाहर के गेट तक आ पहुँचतीं, तो वे कहते, “लो आ गई सरदारनी। नीचे गिरे दानों को किक मारकर सोफे के नीचे कर दो, जल्दी, और भागो ऊपर!”

मेरा बचपन पूरी तरह मेरे बचपन के दिनों में नहीं था। मेरा बचपन मुझे एक हद तक बड़े होने के बाद ही नसीब हुआ। मेरे लिए बड़े होना कोई बचपन का खेल नहीं था। हालाँकि बचपन के खेलों को जब बच्चे खेल रहे होते हैं उनके लिए उस समय भी ज़रूरी नहीं कि वे बचपन के खेल हों। जिन खेलों में हार-जीत रहती है उन्हें बच्चे तो क्या बड़े भी ठीक से नहीं खेल पाते।

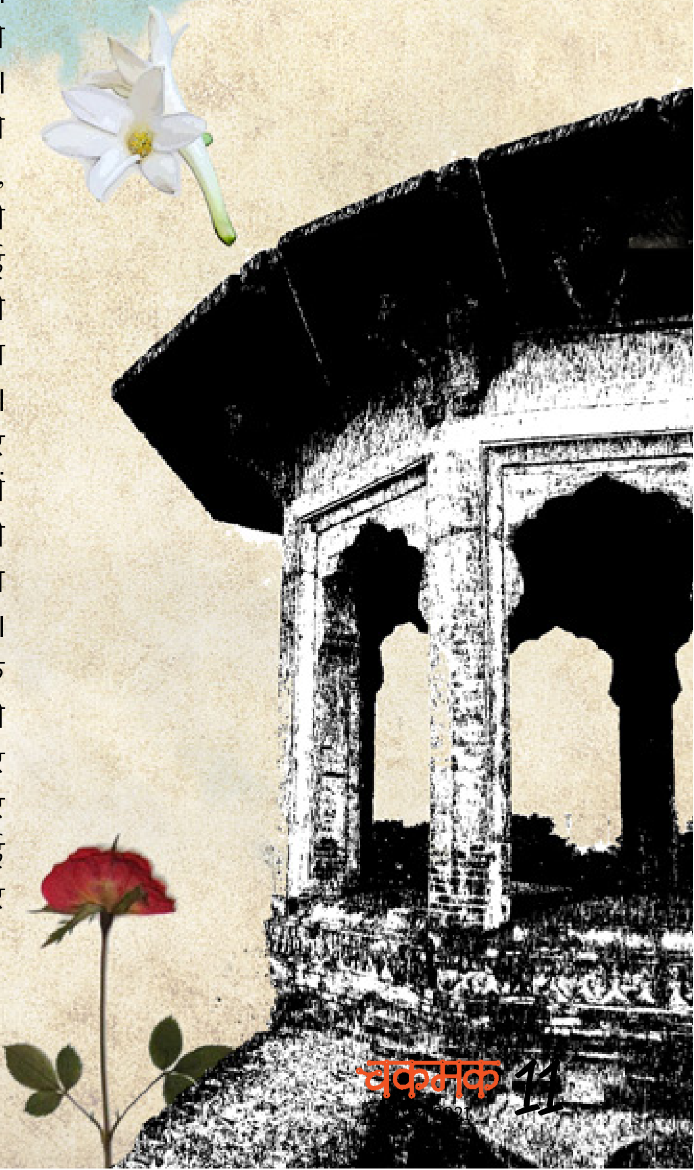

अम्मी-अब्बू की शादी के एकदम बाद की तस्वीर, 1951।
गुरदर्शन कौर और ज्ञान सिंह ग्रोवर

अब्बू की हस्तलिखित नोटबुक जिसमें उन्होंने छपने से पहले फ़ैज़ की ग़ज़लें दर्ज कर रखी थीं।

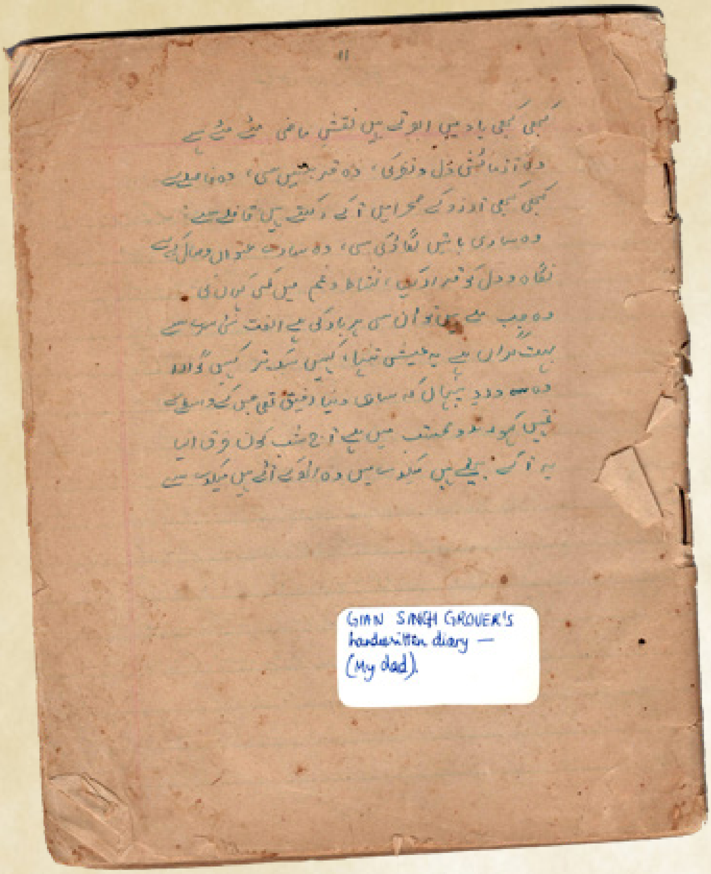

विभाजन के बाद की छुटपन में सुनी कहानियों में ये भी होतीं कि दादा और उनके चार भाइयों के पास उन दिनों के बर्मा (आज का म्यांमार) की राजधानी रंगून में अपने-अपने निजी विमान हुआ करते थे। एक भाई का विमान जापान में काँच का कारोबार करने जाते समय दुर्घटना का शिकार हो गया। नाना की डलहौज़ी में कई दुकानें थीं। वे सब दावानल में जलकर खाक हो गईं। फिर भी अम्मी का परिवार सम्पन्न था और वे गलती से विभाजन से लुटे-पिटे एक कठिन परिवार में ब्याही गई थीं। इस परिवार में खाने को कुछ हो न हो, किताबों की कोई कमी न थी। अम्मी को लेकिन बच्चों को पालना था और अब्बू से दुनियादारी की कोई उम्मीद किसी को भी न थी। फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ पाकिस्तान से उनसे मिलने आया करते थे, जिनकी गोद में बैठकर मैं उन्हें उन्हीं की नज़्में सुनाया करती। अब्बू बीमार भी बहुत रहते और मैंने बहुत छुटपन ही में उन्हें दमे के लिए इंजेक्शन लगाना सीख लिया था।

कुछ कवि मानते हैं कि कोई भी तब तक कवि नहीं हो सकता जब तक उसके और दुनिया के बीच एक बहुत बड़ी दरार पैदा न हो जाए। लेकिन कुछ बच्चे इस दरार में पैदा होते हैं। उनमें से बहुत-से बच्चों का बचपन उनके बचपन में नहीं होता। दरार में पैदा हुआ हर बच्चा कवि भी नहीं बन पाता। ऐसे कुछ बच्चों को हम सड़कों पर फटेहाल घूमते हुए या किसी ढाबे में कप-बसी धोते हुए देख सकते हैं। हालाँकि वे भी कवि-कलाकार होते हैं, जिन्हें कभी-कभी ही अपनी कला को सामने लाने का मौका मिल पाता है।

कभी-कभी याद में उभरते हैं नक़्शे-माज़ी मिटे-मिटे से
वो आज़माइश दिलो-नज़र की वो कुर्बतें सी वो फ़ासले से

- फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ (लिप्यान्तरण : असद ज़ैदी)

हमारे एक शायर दोस्त हैं हरजीत सिंह, उनका यह शेर देखिए:

मैंने अपने बचपन को गेंद की तरह खोया
वक़्त ले गया मुझसे मेरी तोतली बातें

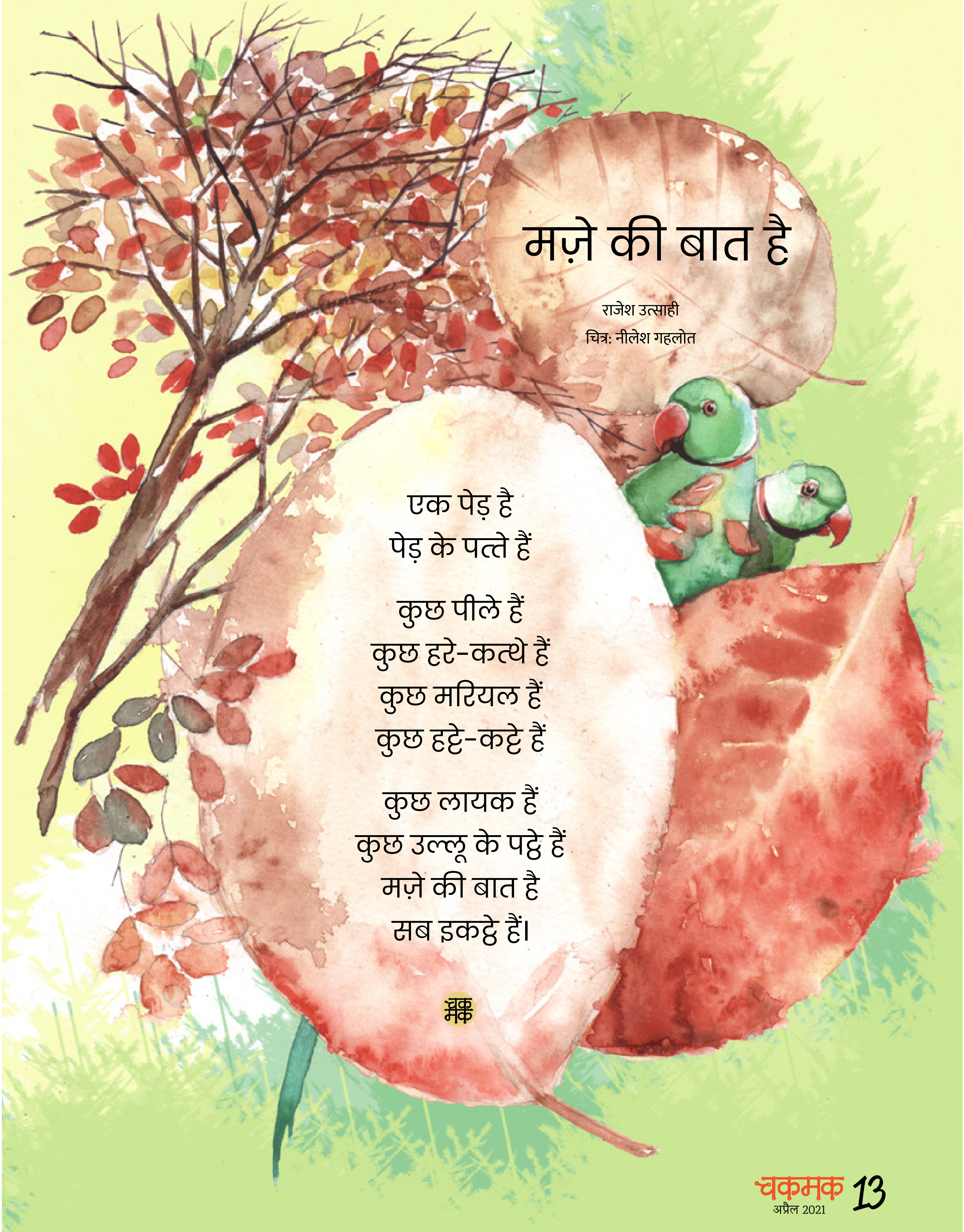

मज़े की बात है

राजेश उत्साही
चित्र: नीलेश गहलोत

एक पेड़ है
पेड़ के पत्ते हैं

कुछ पीले हैं
कुछ हरे-कत्थे हैं
कुछ मरियल हैं
कुछ हट्टे-कट्टे हैं

कुछ लायक हैं
कुछ उल्लू के पट्ठे हैं
मज़े की बात है
सब इकट्ठे हैं।

भूरीबाई
चित्तरकाज

शम्पा शाह

चित्र: भूरीबाई

भील समुदाय में चित्र बनाने वाले के लिए 'लखेरा' या 'लिखेन्द्र' शब्द इस्तेमाल होता है। और चित्र बनाने की क्रिया के लिए 'लिखना' शब्द इस्तेमाल होता है। चित्र बनाने की क्रिया को लिखना कहने से अनायास ही उसका पाट खासा चौड़ा हो जाता है। सामान्य तौर पर चित्रों के सन्दर्भ में सारा दारोमदार सिर्फ 'देखने' पर होता है। जबकि लिखने में देखने, सुनने, स्पर्श करने की अनुभूतियों को भी बिम्ब, रूपक आदि के ज़रिए बताया जाता है। मसलन महुए की फूल की खुशबू, उसके टपकने की आवाज़, जीभ पर उसके मीठे कसैले स्वाद, हथेली पर उसके गुदगुदी स्पर्श को लिखकर दूसरे से साझा किया जा सकता है।

जब भूरीबाई कागज़ पर रंगों से महुए का पेड़ लिखती हैं तो उनकी स्मृति में बचपन का एक ऐसा पेड़ उगता है जो पूरी धरती पर फैला है। आसमान और धरती की आठों दिशाओं में उसके फल टपके हुए हैं। महुआ बीनते हुए, अपनी चिपचिपी उँगली की मिठास को अपनी नन्हीं-सी बहन को चटाने में उसके गर्म, मुलायम लार से भरे हुए मुँह की छुअन भी चित्र में लिखी जाती है। यदि तुम इन चित्रों को सिर्फ आँखों से देखोगे तो शायद कुछ खुशहाल-से रंग ही देख पाओगे। पर यदि तुम इन चित्रों के आगे ठहरे और तुम्हें एक गर्माहट, एक उजास इनसे निकलती हुई महसूस हुई तो वह शायद नन्हीं बहन के साथ सुदूर बचपन में बाँटी गई मिठास की कौंध है जो चित्रों में उतर आई है।

भूरीबाई के चित्रों में अंकित पेड़, पक्षी और मानुषी आकृतियों में एक लय, एक मौज है जो प्रकृति की लय की मात्र नकल नहीं है। अपने चित्रों में मगरमच्छ या भालू, बैलगाड़ी या खुद को बनाते हुए भूरीबाई उन्हें सामने के, ऊपर के, पार्श्व के कई कोणों से देखती हैं और हमें

जब भूरीबाई कागज़ पर रंगों से महुए का पेड़ लिखती हैं तो उनकी स्मृति में बचपन का एक ऐसा पेड़ उगता है जो पूरी धरती पर फैला है। आसमान और धरती की आठों दिशाओं में उसके फल टपके हुए हैं। महुआ बीनते हुए, अपनी चिपचिपी उँगली की मिठास को अपनी नन्हीं-सी बहन को चटाने में उसके गर्म, मुलायम लार से भरे हुए मुँह की छुअन भी चित्र में लिखी जाती है।

दिखाती हैं। एक साथ इतने कोणों से देखना क्या साधारण आँखों से सम्भव है। ऐसा तो केवल मन की आँखों से देखने पर ही सम्भव है।

भूरीबाई की चित्र भाषा, विशेषकर शुरुआती चित्र भाषा में उन्हीं के समुदाय के गोदना अभिप्राय का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके अलावा वस्त्र, आभूषण और टेराकोटा की आकृतियों, सुनी-देखी हुई गीत कथाओं, अनुष्ठानों की दृश्य-अदृश्य आकृतियों ने भी भूरीबाई से अपना रूप साझा किया। किन्तु यह सारे रूपाकार भी एक खास तरह से उनके चित्रों में प्रकट हुए, जिसे हम आज उनकी चित्र शैली कह सकते हैं। इस चित्र शैली में आज भील समुदाय के कई अन्य चित्रकार काम कर रहे हैं।

भूरीबाई के शुरुआती चित्रों और इधर के चित्रों को एक साथ देखना भी एक अलग अनुभव है। इतनी लम्बी रंग यात्रा में बदलाव ना आए तो यह सम्भव ही नहीं है। अक्सर इन बदलावों के आने में चित्रों को देखने और खरीदने वाली आँखों की खासी भूमिका होती है। कागज़ या कैनवास पर दूसरे धब्बे ना पड़ जाएँ, बात सिर्फ यहाँ तक सीमित नहीं रहती। अधिक चटकीले रंगों, सजावट आदि की माँग होती है और लगातार दूसरी चित्र परम्पराओं से तुलना की जाती है। बाज़ार के दबावों से खुद के काम को बचाना किसी भी कलाकार के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। भूरीबाई के लिए भी यह आसान नहीं है।

अपने शुरुआती चित्र जहाँ वे सीधे ब्रश को रंग में डुबोकर कागज़ पर बनाया करती थीं, वहीं अब उन्हें पहले व्यवस्थित तरीके से पेंसिल-रबर से बनाती हैं। फिर कहीं उनमें रंग भरा जाता है। और तब अन्त में बुन्दकियों से उनका श्रृंगार होता है। बुन्दकियाँ भी अपनी जमावट में अब पैटर्न बनाती हैं। किन्तु आज भी भूरीभाई के अधिकांश चित्रों में आकृतियों की आपस में एक लयात्मक गुफ्तगू जारी रहती है।

चित्र लिखने की शुरुआत

भील समुदाय की भूरीबाई का जन्म झाबुआ ज़िले के गाँव पिटोल में हुआ। माता-पिता की खेती बहुत कम थी। उससे घर का गुज़ारा नहीं चलता था। छोटी उम्र से ही भूरीबाई और उनकी बड़ी बहन एक लबाना (जमींदार) के खेत पर निंदाई करने जाने लगीं। दिन भर निंदाई करने पर शाम को एक रुपया मिलता था। लेकिन लबाना के खेतों में हमेशा काम नहीं मिलता था। ज़्यादातर समय दोनों बहनें पीपल के पत्तों का या सूखी, जंगल से इकट्ठा की गईं टहनियों का गट्ठर ले दाहोद जातीं। और वहाँ उन्हें दो रुपए किलो के मोल से एक आदमी को बेचतीं। कुछ समय बाद दोनों बहनें चाचा के साथ भोपाल आ गईं और मज़दूरी करने लगीं – कभी मानव संग्रहालय में, कभी वन विहार में, कभी भारत भवन में।

भारत भवन में मज़दूरी करने के दौरान एक दिन जगदीश स्वामीनाथन (उस समय भारत भवन के निदेशक) आए। उन्होंने पूछा कि तुम लोग कौन समाज हो, तुम्हारे यहाँ शादी कैसे होती है, बच्चे के जन्म पर क्या होता है, मुझे चित्र बनाकर दिखाओगी? भूरीबाई और अन्य औरतों को हिन्दी नहीं आती थी। चाचा के लड़के ने सारी बात बताई। भूरीबाई बोली कि मुझे मज़दूरी कौन देगा? स्वामी जी बोले कि जो चित्र बनाएगा उसे छह की जगह दस रुपए मज़दूरी मिलेगी।

स्वामी जी ने कहा कि घर पर तो दीवार पर चित्र बनाती थीं। लेकिन यहाँ मैं कागज़, रंग और ब्रश दूँगा। उससे चित्र बनाना। दस दिनों तक भूरीबाई ने भारत भवन के पास बने मन्दिर के चबूतरे पर बैठकर चित्र बनाए। और हर दिन नगद दस रुपए पाए। लेकिन बावजूद इसके भूरीबाई के अलावा कोई भी और चित्र बनाने के लिए प्रेरित नहीं हुआ। स्वामी जी को उनके चित्र बहुत पसन्द आए। कुछ दिनों बाद स्वामीनाथन जी ने उन्हें फिर से चित्र बनाने के लिए बुलाया। आज भूरीबाई सैकड़ों चित्र लिख चुकी हैं। और उनके लिखे चित्र कई किताबों में भी प्रकाशित हुए हैं।

छायांकन के लिए सौजन्य – भारत भवन

भूरीबाई के चित्रों से सजी कुछ किताबें

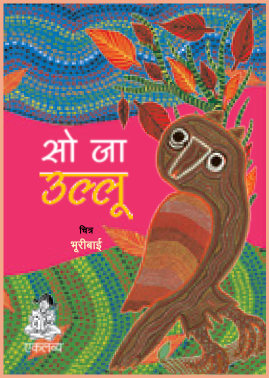

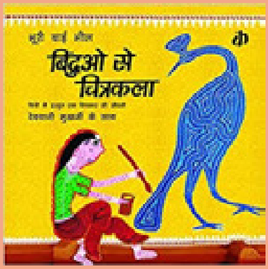

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का
हमारा सवाल था—

तुमने कई अलग-अलग किरदारों की कहानियाँ पढ़ी-सुनी होंगी। उनमें से तुम्हारा पसन्दीदा किरदार कौन है, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है—

यदि तुम स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों में कोई एक नया विषय जोड़ सकते और एक पुराना विषय हटा सकते तो वो कौन-से विषय होंगे, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें
chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो।
चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो।
हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

मैंने चाचा चौधरी की कहानियाँ पढ़ी हैं। मुझे उसमें चाचा चौधरी का किरदार बहुत ही पसन्द है क्योंकि चाचा चौधरी बड़ी ही चतुराई से जुर्म करने वाले लोगों का पता लगा लेते थे। जबकि अच्छे-अच्छे पुलिस वाले और ताकतवर लोग उन तक नहीं पहुँच पाते थे। मैंने चाचा चौधरी से यह भी सीखा है कि ताकत से ज़्यादा दिमाग बलवान होता है। हम दिमाग का सही से उपयोग करके हर समस्या का समाधान कर सकते हैं।

जिया गोयल, सातवीं, वेदान्त अकैडमी, मनावर, धार, मध्य प्रदेश

मैंने मीरा बहन और बाघ की कहानी पढ़ी है। मुझे मीरा बहन का किरदार अच्छा लगा। क्योंकि वो जानवरों का खयाल रखती थी और वो बहुत अच्छी थी।

संजय, तीसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे सबसे अच्छी कहानी अलादीन की लगी। उसमें मेरी पसन्द का किरदार जिन्न था। जिन्न चिराग से निकला था जो अलादीन ने अपने हाथों से घिसा था। जिन्न अलादीन की सिर्फ तीन इच्छाएँ पूरी कर सकता था। जिन्न बहुत तरह के जादू करता था। जादू करके जिन्न अलादीन की मदद करता था। अलादीन और जिन्न बहुत अच्छे दोस्त थे।

राघव सिंह सूद, मंज़िल संस्था, दिल्ली

मैंने *न आसमान गिरा, न चाँद बौखलाया* किताब पढ़ी। यह कहानी है एक लड़की की जिसका नाम है जमुना। उसकी कहानी मेरे जैसी एक छोटी-सी लड़की की है। वो अपने माँ-बाप की मदद करती है, नदी के किनारे से मिट्टी लाना, भाड़ में लकड़ी लगाना, मिट्टी के बर्तनों को रंगना, मिट्टी के घड़ों को बेचना आदि। पर वो केवल चाक नहीं चलाती। उसके पिता उससे कहते हैं कि लड़कियाँ चाक नहीं चलाती हैं। क्योंकि इससे देव नाराज़ हो जाएँगे। इसलिए उनकी बिरादरी में महिलाओं को चाक चलाने की इजाज़त नहीं है। एक रात जमुना चुपके-से चाक चलाने लगी। भले ही उसका घड़ा अच्छा नहीं बना, पर उसने कोशिश तो की। इसलिए मुझे जमुना का किरदार बहुत अच्छा लगता है। मेरे मम्मी-पापा या दादी-बाबा मुझे कोई काम करने के लिए नहीं रोकते हैं। फिर भी जमुना हमेशा मेरे लिए साहस की एक वजह बनी रहती है।

गौरी मिश्रा
चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह-प्रथम
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरा पसन्दीदा किरदार मेलफिशिएंट का है क्योंकि वह बुरी होती है। पर वह अच्छा बनने की कोशिश करती है।

रीतिका पाटीदार, आठवीं, सेंट थॉमस स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

गौरी मिश्रा, चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह-प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैंने सिंड्रेला की कहानियाँ पढ़ी हैं। मुझे उसमें सिंड्रेला का किरदार बहुत ही पसन्द है। क्योंकि सिंड्रेला बहुत सीधी और ईमानदार होती है। सब उसे बहुत दुख देते हैं। किन्तु वह तो राजकुमार के सपनों की रानी होती है। राजकुमार आखिरकार अपने सपनों की रानी सिंड्रेला की खोज कर लेता है जिससे कि सिंड्रेला का जीवन पूरी तरह बदल जाता है। इससे मैंने सीखा कि दुख और सुख जीवन का हिस्सा है। अगर हम किसी कारण से दुख में है तो बाद में सुख भी ज़रूर आएगा।

तनवी सोलंकी, चौथी, वेदान्त अकैडमी, मनावर, धार, मध्य प्रदेश

चित्र: समीक्षा आनन्द, पाँचवीं, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

मेरी पसन्दीदा कहानी का नाम है काठ के पुतले। इस कहानी में ऐसी कई चीज़ें हैं जो इसे बहुत ही रोचक बनाती हैं। आज तक मैंने जितनी भी कहानियाँ पढ़ी हैं उन सभी में प्रस्तुत किए गए पात्र इन्सान, जानवर, देवी-देवता या परियाँ होती हैं। लेकिन इस कहानी के सभी पात्र लकड़ी के बने खिलौने और पुतले हैं, जो मुझे बहुत आश्चर्यजनक लगे।

आँचल, नौवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर, दिल्ली

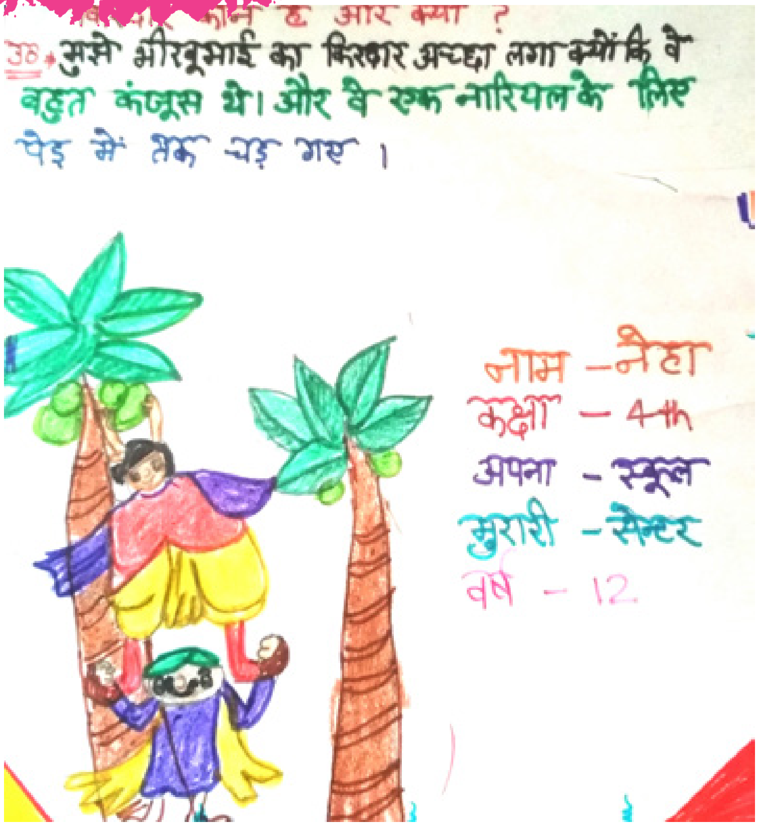

चित्र: नेहा, चौथी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: पुष्पा, तीसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

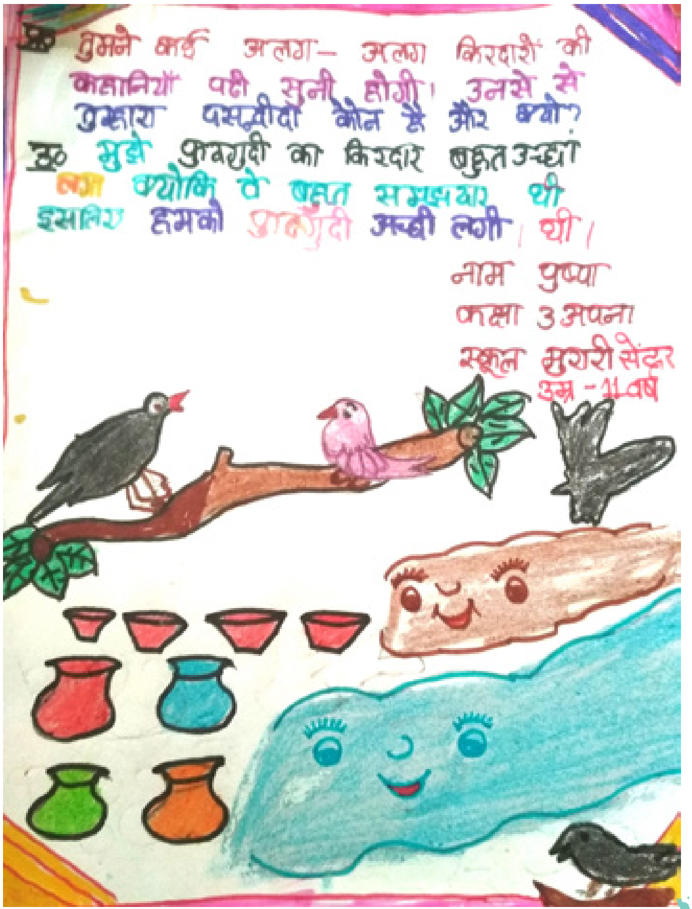

मैंने एक कहानी पढ़ी। उस कहानी का किरदार यमराज बहुत ही अच्छा लगा क्योंकि वो बेटा और बेटी में फर्क नहीं करता था। और वह उस आदमी को समझाता है कि अरे मूर्ख! बेटा-बेटी में कोई फर्क नहीं होता। जो काम बेटा कर सकता है वो बेटी भी तो कर सकती है। इसलिए मुझे यमराज का किरदार अच्छा लगा। उस कहानी का नाम था – काश, एक बेटा मेरा भी होता!

छाया कुमारी, आठवीं, नारायणपुर, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

nature conservation foundation
science for conservation

म्यूज़िकल मैना

मवेशियों के दोस्त

तुमने अक्सर मैना को मवेशियों की सवारी करते या खेतों में उनका पीछा करते हुए, या फिर ज़मीन पर कीड़े चुगते हुए देखा होगा। ये मवेशियों की पीठ, आँखों, कानों और नाक से भी कीड़े चुगते* हैं।

मैना (जिन्हें मोटे तौर पर स्टारलिंग कहा जाता है) आम तौर पर जोड़ों या समूहों में ही दिखाई देते हैं। कभी-कभार ही ये अकेले दिखते हैं। रात में ये बड़े-बड़े समूहों में सोते हैं। कभी-कभी तो हज़ारों के झुण्ड में। मैनाएँ कभी-कभी दूसरे परिन्दों जैसे घरेलू कौए और तोतों के साथ भी सो जाते हैं। कुछ मैनाएँ केवल जंगलों में मिलते हैं। लेकिन फिर भी बहुत-सी मैनाओं को तुम खेतों में, घास के मैदानों में और इन्सानों के रहवासी इलाकों की खुली जगहों में देख सकते हो।

शोर मचाने वाले

सूरज उगने के पहले ही मैनाओं के झुण्डों का समूह-गान शुरू हो जाता है और सूरज उगने तक चलता रहता है।

मैनाएँ गड़गड़ाने, चहचहाने, चीखने और सीटी बजाने के अलावा कर्कश आवाज़ें भी निकालते हैं। ये अपनी नकल करने की कला के लिए भी जाने जाते हैं। आम तौर पर जो मैनाएँ तुम्हें अपने घरों के आसपास दिखते हैं वह बहुत अच्छी नकल नहीं करते। लेकिन पहाड़ी मैना, जो जंगलों में रहता है, तरह-तरह की आवाज़ों की नकल करता है। इस किस्म के मैना इन्सानों की आवाज़ भी निकाल सकते हैं।

*मैना पक्षी में नर व मादा दोनों ही शामिल हैं। इसलिए हमने उनके बारे में इस तरह से लिखा है कि चुगते हैं, रहते हैं आदि।

कॉमन मैना

ब्राम्हनी स्टारलिंग

पहाड़ी मैना

बैंक मैना

एशियन पाइड स्टारलिंग

जंगली मैना

फील्ड डायरी के लिए

- मैनाओं की खोज में टहलने निकलो। नर और मादा मैना एक जैसे ही दिखते हैं। ऊपर कुछ मैनाओं के चित्र दिए गए हैं, जो तुम्हें दिख सकते हैं।
- जब भी कोई मैना तुम्हें दिखे तो यह नोट कर लो कि तुम्हें कितने मैना दिखे, कहाँ दिखे (सड़क पर, पेड़ पर, बिजली के तारों पर आदि) और वे क्या कर रहे थे (बैठे थे, खा रहे थे या उड़ रहे थे)? क्या वे आवाज़ भी कर रहे थे? वे किस तरह की आवाज़ें निकाल रहे थे उन्हें भी अपनी डायरी में लिख लो।
- कम से कम पाँच अलग-अलग समय पर मैनाओं की तलाश में निकलो। कोशिश करना कि अलग-अलग दिशाओं में और अलग-अलग जगहों में जाओ ताकि उन्हीं मैनाओं को दोबारा देखने की सम्भावना कम हो जाए। और तुम नई मैनाओं को देख पाओ।

प्रतियोगिता

chakmak@eklavya.in पर हमें लिखो और पक्षियों के बारे में एक किताब जीतने का मौका पाओ। हमें बताओ कि कितनी बार तुमने मैना को अकेले देखा? कितनी बार तुमने उन्हें अन्य मैनाओं या दूसरे पक्षियों के साथ देखा? जब तुमने उन्हें देखा तब वे क्या कर रहे थे? क्या तुमने उन्हें अपने बच्चों को खाना खिलाते हुए, झगड़ते हुए या अपने पंखों को संवारते हुए देखा?

अनुवाद: मुदित श्रीवास्तव

संख्याविहीन लोग

क्या होता है जब किसी भाषा में संख्याओं के लिए शब्द ही न हों?

तुम्हें यह जानकर शायद आश्चर्य होगा कि सभी संस्कृतियों में संख्याएँ नहीं होती हैं। अमेजन के घने जंगलों में दूर कहीं रहने वाले शिकारी-संग्रहकर्ता (Hunter-Gatherers) ऐसे ही लोग हैं। ये लोग सटीक मात्राओं के लिए संख्याओं के बजाय सिर्फ 'कुछ' या 'थोड़ा' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

इनसे उलट हमारी ज़िन्दगियाँ तो संख्याओं की पटरियों पर ही चलती हैं। ज़रा सोचकर देखो समय क्या है, तुम्हारी उम्र क्या है, तुम्हारे पास कितने पैसे हैं इत्यादि बातें संख्याओं से ही जुड़ी हैं। संख्याएँ हमारे जीवन के हर हिस्से को प्रभावित करती हैं।

लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो हम जैसे संख्याओं से ग्रस्त लोग अनोखे हैं। मनुष्यों के ज़्यादातर जीवन-काल, यानी कि 2,00,000 सालों तक हमारे पास सटीक मात्राओं को दर्शाने के कोई साधन नहीं थे। और तो और, वर्तमान की लगभग 7000 भाषाओं में भी संख्याओं के इस्तेमाल में काफी विविधता है।

संख्याविहीन लोग

जिन संस्कृतियों (समुदायों) में सिर्फ एक या दो स्पष्ट संख्याएँ हैं उनमें शामिल हैं अमेज़न के मुण्डुरुकु और पिराहा समुदाय और निकारागुआ देश के कुछ वयस्क जिन्हें कभी संख्याएँ सिखाई नहीं गईं।

संख्याओं के बिना वयस्क लोग चार जितनी कम मात्राओं को भी याद करने और फर्क करने से जूझते हैं। इनके सामने घड़े में चार-पाँच बीज डालने और उनको एक-एक करके निकालने पर भी ये लोग यह नहीं कह पाते हैं कि कब सारे बीज निकाल दिए गए हैं। ऐसे कुछ अन्य प्रयोगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि तुम्हें और हमें जो बात सामान्य लगती है, उतना गणित भी संख्याविहीन लोग नहीं कर पाते हैं।

यहाँ यह बात कहना ज़रूरी है कि ये लोग दिमागी तौर पर पूरी तरह स्वस्थ हैं और अपने-अपने इलाकों में सफलतापूर्वक जी रहे हैं। जंगल-नदियों की पारिस्थितिकी की इनकी जानकारी उत्कृष्ट है।

फिर भी, संख्याविहीन लोगों को कुछ दिक्कतें तो होती ही होंगी। गिनती के बिना कोई ये कैसे कह सकता है कि पेड़ पर सात या आठ नरियल टँगे हैं? हमारे लिए यह फर्क करना आसान है। लेकिन उनके लिए इन दोनों संख्याओं का फर्क स्पष्ट नहीं होगा।

क्या संख्याएँ स्वाभाविक हैं?

यह बात ज़्यादातर समुदायों के उन बच्चों में भी देखी जा सकती है जिन्हें संख्याओं का ज्ञान नहीं है। संख्याओं के बारे में सिखाए जाने से पहले हम भी तीन से ज़्यादा मात्राओं के बीच अन्दाज़न ही फर्क कर पाते हैं। संख्यात्मक शब्दों के एकदम सही अर्थ को समझना बहुत ही कठिन काम है। और इसमें बच्चों को कई साल लग जाते हैं। शुरुआत में बच्चे संख्याओं को वैसे ही सीखते हैं, जैसे अक्षरों को। वे उनको पहचानते हैं। लेकिन हर संख्या की समझ शायद नहीं होती है। समय के साथ उन्हें यह बात समझ में आ जाती है कि हर संख्या की मात्रा क्रम में उसके पहले की संख्या से एक अधिक है। यह हमारे संख्यात्मक ज्ञान की नींव है। इसे सीखने के लिए कड़ा रियाज़ करना पड़ता है!

अगर हमारी परवरिश में संख्याओं पर आधारित रीति-रिवाज़ ना होते, स्कूल और एकदम छुटपन से घर में ये सिखाए ना जाते तो हम में से किसी को भी संख्याओं का प्रयोग पता नहीं होता। वैसे हम खाली घड़े नहीं होते हैं। मात्राओं की कुछ समझ के साथ हम पैदा होते हैं। पैदा होते ही हम दो ऐसी मात्राओं में फर्क कर पाते हैं जो एक-दूसरे से काफी अलग हैं जैसे कि आठ और सोलह चीज़ों में।

मनुष्यों के अलावा कुछ अन्य जन्तु भी इस तरह की सोच (कल्पना) के काबिल हैं। चिम्पान्ज़ी और अन्य वानरों की तुलना में हमारा यह हुनर बहुत अद्‌भुत नहीं है। और हमारी यह सोच दूर के रिश्तेदारों जैसे कुछ पक्षियों से भी मिलती-जुलती है। उन्हें भी यदि संख्याएँ सिखाई जाएँ तो वे भी मात्रा सम्बन्धी अपनी सोच बदल सकते हैं।

इस साझा सूझबूझ के बावजूद मनुष्यों में जो संख्या प्रणालियाँ विकसित हुई हैं, वे खास हैं। ये अन्य किसी जानवर में नहीं दिखाई देतीं। इसका एक कारण है हमारे दिमाग की भाषा के लिए काबिलियत (संज्ञानात्मक योग्यता)। दूसरा है हमारी हाथों पर फोकस करके गिनने की फितरत जिससे हम 3 से ज़्यादा संख्याओं के बारे में सोचने लगे।

संख्याविहीन लोगों को समझने पर हमें यह बात समझ में आती है कि संख्याओं का हमारी ज़िन्दगियों पर कितना असर है। कभी सोचा है कि बिना संख्याओं की हमारी ज़िन्दगी कैसी होगी?

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

यह लेख *द कॉन्वर्ज़ेशन* ऑनलाइन पत्रिका में 26 अप्रैल, 2017 को प्रकाशित लेख 'Anumeric' people: What happens when a language has no words for numbers? का संक्षिप्त अनुवाद है।

भविष्य में जीवों का रंग बदलेगा

फिनलैंड के टावनी उल्लू के दो रूप

उन्नीसवीं सदी में किए गए इस दावे पर अब बहस छिड़ गई है कि वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी जानवरों के रंग-रूप में किस तरह के बदलाव लाएगी।

1800 के दशके में जीव विज्ञानियों ने इस सम्बन्ध में कुछ नियम दिए थे कि बदलते तापमान का पारिस्थितिकी और जैव विकास पर किस तरह प्रभाव पड़ेगा। इनमें से एक नियम था कि गर्म वातावरण में जानवरों के शरीर के उपांग (जैसे कान, चोंच) बड़े होंगे। ये शरीर की ऊष्मा को बाहर निकालने में मददगार होते हैं। एक अन्य नियम के अनुसार ध्रुवों के आसपास रहने वाले जीवों के शरीर आम तौर पर बड़े होते हैं क्योंकि बड़ा शरीर ऊष्मा के संरक्षण में मदद करता है।

साल 1833 में जर्मन जीव विज्ञानी कॉन्स्टेंटिन ग्लोगर ने बताया था कि गर्म इलाकों में रहने वाले जीवों का बाहरी आवरण आम तौर पर गहरे रंग का होता है, जबकि ठण्डे इलाकों में रहने वाले जीवों का बाहरी आवरण हल्के रंग का। स्तनधारियों में गहरे रंग की त्वचा और बाल हानिकारक पराबैंगनी किरणों से सुरक्षा देते हैं। इसलिए सूर्य के प्रकाश से भरपूर इलाकों में गहरा रंग फायदेमन्द होता है। पक्षियों में भी गहरे रंग के पंखों में मौजूद विशिष्ट मेलेनिन रंजक बैक्टीरियल संक्रमण से सुरक्षा देते हैं।

हाल में कुछ वैज्ञानिकों ने इन नियमों का उपयोग कर पूर्वानुमान लगाया कि भविष्य में जलवायु परिवर्तन (तापमान में बढ़ोतरी) जीवों के शरीर में किस तरह के बदलाव ला सकता है। इनके आधार पर उन्होंने बताया कि पृथ्वी के तापमान में बढ़ोतरी होने पर अधिकांश आबादी गहरे रंग वाले जानवरों की होगी*।

कुछ स्थानों पर उनकी भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई है। फिनलैंड में टावनी उल्लू दो तरह के रंग में पाए जाते हैं – गहरे कत्थई रंग में या सफेदी लिए हुए हल्के स्लेटी रंग में। हल्का स्लेटी रंग उल्लुओं को बर्फ की पृष्ठभूमि में छिपे रहने में मदद करता है। लेकिन फिनलैंड में हिमाच्छादन कम होने के साथ कत्थई रंग के उल्लुओं की संख्या बढ़ी है। 1960 के आसपास वहाँ गहरे रंग के उल्लुओं की आबादी लगभग 12 प्रतिशत थी जो 2010 में बढ़कर 40 प्रतिशत तक हो गई।

लेकिन इस पर अन्य जीव विज्ञानियों का कहना है कि मामला इतना भर नहीं है। ग्लोगर ने अपने नियम

* यानी कि वातावरण में लम्बे समय के लिए बदलाव होने पर वहाँ की जानवरों की आबादी में कई (सैकड़ों/हज़ारों/लाखों) पीढ़ियों बाद किसी गुण में बदलाव दिखता है। ये नया गुण उन जानवरों को बदली हुई परिस्थितियों में बेहतर ढंग से जीने में मदद कर सकता है।

में तापमान और आर्द्रता (हवा में नमी) दोनों कारकों को मिला दिया है। यदि तापमान बढ़ने के साथ-साथ आर्द्रता नहीं बढ़ती है तो ग्लोगर के नियम के बिलकुल उलट स्थिति बनेगी। गर्म वातावरण में हल्के रंग के जीवों की संख्या अधिक होगी, खासकर ठण्डे रक्त वाले जीवों (यानी ऐसे जीव जिनके शरीर का तापमान बाहरी वातावरण पर निर्भर है) की। कीट और सरीसृप गर्मी के लिए बाहरी स्रोत (सूर्य के प्रकाश) पर निर्भर होते हैं। ठण्डी जगहों पर इनकी त्वचा का रंग गहरा होता है जो इन्हें पर्याप्त मात्रा में ऊष्मा सोखने में मदद करता है। यदि जलवायु गर्म हुई तो हल्के रंग के जीव अधिक होंगे।

यानी कि यदि तापमान और आर्द्रता दोनों ही बदलती हैं तो जीवों में होने वाले जलवायु सम्बन्धी रंग परिवर्तन को समझना थोड़ा पेचीदा होगा। भौतिकी या रसायन विज्ञान के विपरीत जीव विज्ञान में कोई भी नियम एकदम सटीक या निरपेक्ष नहीं हो सकता। यह गुरुत्वाकर्षण की तरह नहीं है, जो सभी जगह लागू होगा।

यदि किसी तरह के सामान्य रुझान दिखते भी हैं तब भी यह कहना मुश्किल ही होगा कि कोई विशिष्ट प्रजाति किसी परिवर्तन पर किस तरह प्रतिक्रिया देगी। उदाहरण के लिए तितलियाँ धूप तापते हुए ऊष्मा सोखती हैं, लेकिन उनके पूरे पंखों की बजाए पंखों की निचली सतह पर मौजूद मात्र एक छोटे-से हिस्से से ऊष्मा सोखी जाती है। इस स्थिति में तितलियों के पंखों का रंग चाहे कुछ भी रहे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि ऊष्मा तो पंखों के एक छोटे हिस्से-से सोखी जा रही है।

अगर हम यह नहीं जानते कि कोई जीव अपने आसपास के पर्यावरण से वास्तव में किस तरह सम्पर्क करता है, तो हम उसके बारे में किसी भी तरह के ठीक-ठाक अनुमान नहीं लगा पाएँगे।

जिस तेज़ी-से पृथ्वी गर्म होती जा रही है उससे वैज्ञानिकों के पास जल्द ही इस विषय पर व्यापक डेटा उपलब्ध होगा। और यदि जीवों के प्राकृतिक आवास ही नष्ट हो गए और प्रजातियाँ विलुप्त हो गईं तो जीवों के बदलते स्वरूपों पर लगाए गए हमारे सारे पूर्वानुमान धरे के धरे रहे जाएँगे।

स्रोत फीचर्स से साभार

ध्रुवीय जीवों की कुछ किस्में जो हल्के रंग की होती हैं, खासकर बर्फीली ठण्ड में।

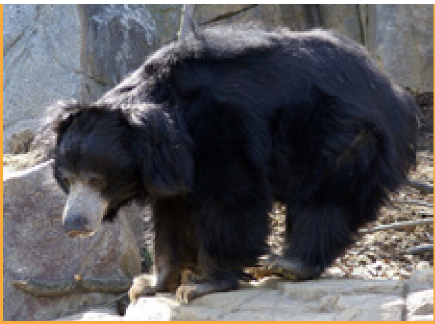

गर्म इलाकों में पाई जाने वाले जीवों की कुछ किस्में जो अकसर गहरे रंग की होती हैं।

नज़मा स्कूल आई

चन्दन यादव
चित्र: हबीब अली

मास्टर गिरिधर जी चड्डी-बनियान सहित बदन पर सात कपड़े डटाकर आए थे। फिर भी उन्हें अफसोस हो रहा था कि सिर पर ऊनी टोपी और हाथों में दस्ताने और पहन लिए होते तो अच्छा रहता। वे ठिठुरते और आल्हा गाते हुए घर से स्कूल तक आ गए थे। और अब स्कूल में ठिठुर रहे थे। उनको आल्हा की ही एक पंक्ति याद आई, जो युद्ध की तैयारी से सम्बन्धित है–

"पाँचों कपड़ों को पहना है, पाँचों लए हथियार सजाए।"

गिरिधर जी ने सोचा कि युद्ध पर जाने के लिए पाँच कपड़े ही काफी होते थे। ठण्ड है कि सात कपड़ों से भी नहीं डट रही।

गिरिधर जी इस सरकारी स्कूल के इकलौते मास्टर थे। वे बिला नागा स्कूल आते थे। और पूरी ईमानदारी से बच्चों को पढ़ाते थे। स्कूल लगने का समय होने में पाँच मिनट बाकी थे। अभी तक एक भी बच्चा नहीं आया था। कोई और समय तो दस मिनट पहले ही सारे बच्चे आ जाते थे। गिरिधर जी मन ही मन खुश हुए, गनीमत है कि बच्चे नहीं आए। अब तो पाँच मिनट ही बचे हैं। बच्चों को आना होता तो अब तक आ चुके होते। उन्होंने बाँस से बनी नसैनी उठाकर दीवार से लगाई। नियम था कि अध्यापक स्कूल में पहुँचकर अपनी आमद ऑनलाइन दर्ज कराएँ। नीचे नेटवर्क नहीं मिलता था, इसलिए आमद दर्ज करने के लिए उन्हें स्कूल की छत पर जाना पड़ता था।

गिरिधर जी आमद दर्ज कराकर नीचे आए। वे बहुत खुश थे कि इस भीषण ठण्ड में पढ़ाना नहीं पड़ेगा। धूप निकल आई तो मैदान में कुर्सी डालकर आराम से अखबार पढ़ेंगे। वे यही सब सोचते हुए खुश हो रहे थे कि एक सुरीली आवाज़ ने उनका ध्यान भंग कर दिया, "नमस्ते सर।"

गिरिधर जी को लगा जैसे बम फटा हो। कन्धे पर बस्ता टाँगे मुस्कराती हुई नज़मा उनके सामने खड़ी थी। तुम कैसे आई...? उनके मुँह से निकलते-निकलते बचा।

खैर जो भी हो गिरिधर जी लकीर के पक्के मास्टर थे। प्रार्थना का समय हो गया था। नियत जगह पर नज़मा खड़ी हो गई। गिरिधर जी उसके सामने खड़े

हो गए। दोनों मिलकर प्रेरणा गीत के रूप में रोज़ गाई जाने वाली नज़्म गाने लगे–

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी

ज़िन्दगी शम्मा की सूरत हो खुदाया मेरी

इसके बाद जन गण मन गाया गया। अन्त में भारत माता की जय बोलकर नज़मा कक्षा में चली गई। गिरिधर जी कक्षा के बाहर ठगे-से खड़े थे। उनको समझ नहीं आ रहा था कि अब वे क्या करें? फिर मन ही मन कुछ फैसला करके कक्षा में घुसे। कुछ देर तक हिम्मत जुटाते रहे। फिर मरी-सी आवाज़ में नज़मा से बोले, “आज़ तो ठण्ड के कारण कोई नहीं आया। तुम चाहो तो वापिस अपने घर चली जाओ।”

नज़मा बोली, “नहीं सर, मैं यहीं पढ़ूँगी। घर गई तो माँ समझेंगी मैं पढ़ाई से बचने का बहाना कर रही हूँ।” सुनकर गिरिधर जी लज्जित हुए। बोले, “ठीक है। तुमको जो भी पढ़ना-लिखना हो, पढ़ो।” कहकर वे तेज़ी-से कक्षा से बाहर हो गए।

गिरिधर जी ने अखबार और कुर्सी उठाई। उसे मैदान में रखा और अखबार बाँचने लगे। इतने में मिड डे मील बनाने वाली जसोदा आ गई। मिड डे मील में किस दिन क्या बनेगा, पहले से तय था। आज खीर-पूरी का दिन था। जसोदा गिरिधर जी से रसोई की चाबी लेकर चली गई।

गिरिधर जी अखबार पढ़ने लगे। पर इसमें उनका मन नहीं लग रहा था। उनका फर्ज़ बार-बार उन्हें विचलित कर रहा था। उन्होंने अखबार कुर्सी पर पटका और कक्षा में चले गए। वे चॉक लेकर बोर्ड के पास खड़े हुए और बोले, “हमने पिछले दिनों हासिल का जोड़ सीखा था ना। उसके सवाल दे रहा हूँ। इनको अपनी कॉपी में हल करके दिखाओ।” गिरिधर जी ने पूरा बोर्ड सवालों से भर दिया। उन्होंने जान-बूझकर कठिन सवाल लिखे। ताकि कम से कम मिड डे मील के समय तक नज़मा उनमें लगी रहे।

सवाल देकर गिरिधर जी बाहर निकले और अखबार पढ़ने लगे। अब वे कुछ सन्तोष के साथ पढ़ पा रहे थे। अभी उन्हें पन्द्रह मिनट ही हुए थे कि सिर के पीछे से आवाज़ आई, “सर, जाँच दो।”

गिरिधर जी कॉपी हाथ में लेकर बुदबुदाए, “जाँचना क्या, जो है सब सही है।”

नज़मा ने पूछा, “क्या सर?”

गिरिधर जी बोले, “नहीं, कुछ नहीं।”

गिरिधर जी ने जाँचे। सब सवाल सही थे।

छुटटी होने तक यही सिलसिला चलता रहा। गिरिधर जी ने बोर्ड भर के गुणा के सवाल दिए। नज़मा बीस मिनट बाद ही कॉपी चेक करवाने के लिए हाज़िर हो गई। उन्होंने बोर्ड भर के भाग के सवाल दिए। नज़मा को उसमें भी सिर्फ आधा घण्टा लगा। गिरिधर जी ने हिन्दी के एक पाठ के प्रश्नों के उत्तर लिखवाए। फिर दूसरे और तीसरे पाठ के भी लिखवाने पड़े। नज़मा मज़े-से सारे काम करके कॉपी जँचवाने आती रही।

बीच में मिड डे मील खाया गया। आज पहली बार मीठे सफेद पानी में चावल नहीं पके थे। सचमुच की खीर बनी थी।

खाने के बाद गिरिधर जी को लगा कि एक बार और नज़मा से पूछ लेना चाहिए। शायद अब वह घर जाना चाहे। पर नज़मा एकदम मुकर गई, “नहीं सर, मैं पढ़ूँगी।” उसने पूछा, “मैं बरामदे में बैठ जाऊँ? कमरे में अकेले अच्छा नहीं लगता।”

गिरिधर जी हाँ बोलने के अलावा कर भी क्या सकते थे।

अब एक बार फिर से वही सिलसिला चला। गिरिधर जी नज़मा के सामने एक के बाद एक चुनौती प्रस्तुत करते रहे। नज़मा हर चुनौती को चुटकियों में पार करती रही। गिरिधर जी को लगा कि वे किसी महल्ला टीम के बॉलर हैं और नज़मा धोनी जैसी बल्लेबाज़। जो उनकी हर गेंद की धुनाई कर रही है।

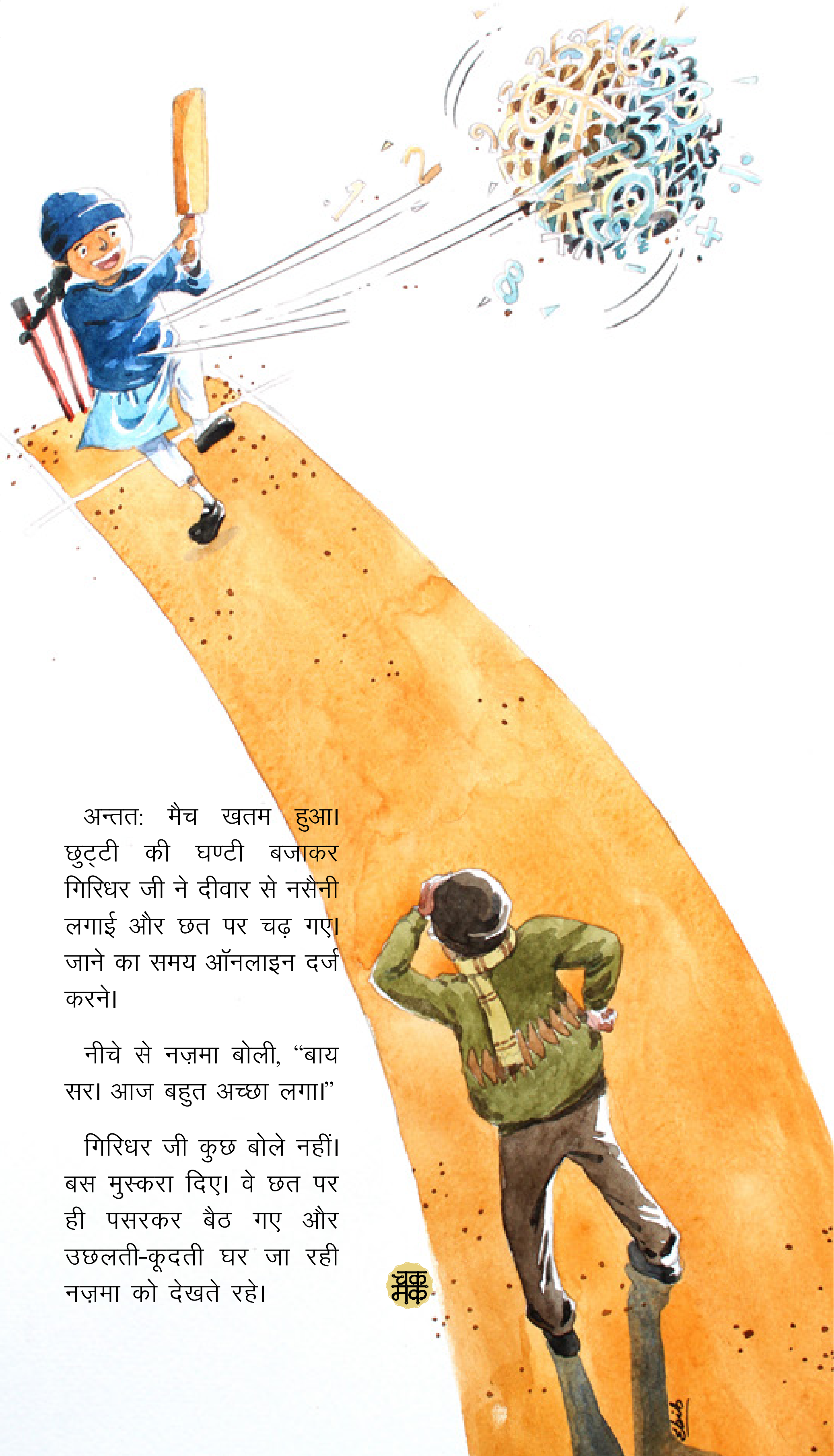

अन्ततः मैच खतम हुआ। छुट्टी की घण्टी बजाकर गिरिधर जी ने दीवार से नसैनी लगाई और छत पर चढ़ गए। जाने का समय ऑनलाइन दर्ज करने।

नीचे से नज़मा बोली, “बाय सर। आज बहुत अच्छा लगा।”

गिरिधर जी कुछ बोले नहीं। बस मुस्करा दिए। वे छत पर ही पसरकर बैठ गए और उछलती-कूदती घर जा रही नज़मा को देखते रहे।

तुम भी जानो

बतख के साथ वॉक

लॉकडाउन के शुरुआती दौर में स्पेन में घरों से बाहर निकलने की मनाही थी। वॉक पर जाने के लिए भी किसी को बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। हाँ, यदि अपने कुत्ते को वॉक पर ले जा रहे हों तो बाहर निकल सकते थे। यह नियम केवल पालतू कुत्तों को वॉक पर ले जाने के लिए था। लेकिन पुलिस ने बहुत-से ऐसे लोगों को पकड़ा जो बाहर घूमने के लिए बकरी, मुर्गे, बतख और केकड़े तक को वॉक पर ले जा रहे थे। ऐसे कुछ लोगों पर पुलिस ने जुर्माना भी लगाया। ज़ाहिर-सी बात है घर में इतने लम्बे समय कैद रहने के बाद लोग बाहर घूमने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे!

मार्स रोवर

30 जुलाई 2020 को अमरीकी अन्तरिक्ष एजेंसी नासा ने अपना मिशन 'मार्स 2020' लॉन्च किया था। इस मिशन में पर्सिवियरेंस नाम के एक रोवर को मंगल भेजा गया। 18 फरवरी 2021 की रात इसे पैराशूट की मदद से मंगल पर लैंड कराया गया। रोवर एक ऐसा वाहन है, जो दूसरे ग्रहों या उपग्रहों की सतह पर चल सकता है। इसका उद्देश्य है मंगल की छानबीन करना और वहाँ से मिली वैज्ञानिक जानकारियों को पृथ्वी पर भेजना। इससे पहले भी चार रोवर मंगल पर जा चुके हैं। कार जितने साइज़ वाले पर्सिवियरेंस रोवर में सात वैज्ञानिक उपकरण लगाए गए हैं, जो इस मिशन को पूरा करने के काम आएँगे।

मेरा पन्ना

चित्र: मौली, बाल भवन, वड़ोदरा, गुजरात

हमारे महल्ले में आधे से ज़्यादा लोगों के पास राशन कार्ड है। राशन कार्ड वालों को सोसाइटी से चावल मिलता है। चावल मिलने से पहले कोई डेट फिक्स नहीं रहती। अचानक से जब चावल मिलने की तारीख आती है तो लोगों को चावल लेने के लिए लम्बी लाइन लगानी पड़ती है। मेरी माँ ड्यूटी जाती हैं तो मैं चावल लेने जाती हूँ।

सोसाइटी में घोटाला

शहीद स्कूल, बीरगाँव, छत्तीसगढ़

चित्र: कल्पना कुमारी, आठवीं, ग्राम गोठी, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

कई बार मैं सोसाइटी में चावल लेने गई हूँ तो मुझे काँटा मारकर चावल दिया गया। एक दिन मैंने दुकान में चावल तुलवाया तो मुझे पक्केपन से पता चला कि सोसाइटी में काँटा मारकर दे रहे हैं। मेरे परिवार में पाँच लोग हैं। हमें हर महीने पैंतीस किलोग्राम चावल मिलना चाहिए मगर कई बार इससे कम मिलता है।

जब लॉकडाउन हुआ तो पूरे लॉकडाउन में एक ही बार चावल मिला। लॉकडाउन में सब चीज़ों की मँहगाई बढ़ गई थी। इसके चलते हमारी बस्ती में कुपोषण भी बढ़ रहा है। सोसाइटी में पहले चावल के साथ चना भी मिलता थाा। पर अब केवल चावल और एक किलो शक्कर मिलती है। कभी-कभी अचानक चना मिल जाता है। पर हमें पता नहीं चलता कि सरकार कितना चावल, चना, शक्कर आदि सोसाइटी में भेजती है और इसमें से हमारे पास कितना हिस्सा पहुँचता है।

हमारे पास चावल यदि कम पहुँच रहा है तो बाकी चावल के साथ क्या किया जा रहा है? क्या वो सरकार के पास वापिस जाता है या ब्लैक में बेचा जाता है? हमें लगता है कि हर सोसाइटी में यह जानकारी उपलब्ध होना चाहिए कि सरकार कितना चावल, चना, शक्कर आदि भेजती है।

यह रचना पहले शहीद स्कूल की पत्रिका *बस्ती न्यूज़* में प्रकाशित हुई थी।

चित्र: शार्वी कनाडे, चौथी

खुरई का पार्क

नितिन कुशवाह, प्राथमिक शाला कल्याणपुर, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

खुरई ज़िले के अन्दर
पार्क बड़ा ही सुन्दर
दो करोड़ चालीस लाख लागे इसमें
झूले, रिसकपट्‌टी, तालाब जिसमें

नगर परिषद खुरई ने बनाया इसको
कई फूलों से सजाया जिसको
चारों तरफ हरियाली है
देखो कितनी खुशहाली है

नाव से तालाब में भ्रमण करते हैं
सुबह-शाम लोग यहाँ रहते हैं
25 प्रकार के फूल, फूले हैं
खुशी-से कितने झूले हैं

मैं खुरई में नहीं रहता हूँ
अपने टीचर को ले जाने को कहता हूँ

मेरी साइकिल

सुमित अहिरवार, पाँचवीं, प्राथमिक शाला
गम्भीरिया, सागर, मध्य प्रदेश

मुझे लाल कलर की साइकिल चाहिए। अगर मुझे साइकिल मिल जाए तो मेरा सपना पूरा हो जाएगा। फिर मैं रोज़ साइकिल चलाने जाऊँगा। मैं अपने दोस्तों के घर जाऊँगा और दोस्तों से पूछूँगा कि मेरी साइकिल कैसी है। वो बोलेंगे कि अच्छी है।

घड़ी की मरम्मत

चित्र व लेख: दिलीप साहू, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे नाना की घड़ी की मरम्मत की दुकान है। लेकिन वो घड़ी का ही सामान नहीं रखते। और भी सामान रखते हैं जैसे कि तारा, हीटर, पंखा, बोर्ड, पंखे के पर, एफ एम रेडियो, बाजा, चिप वाला बाजा, टॉर्च, छोटी बूफर, पंखे का कंडेनसर, चार्जर, चार्जर पिन, सिम, मोबाइल रिचार्ज। घड़ी के सामान में घड़ी का पट्टा, पिन, सुई, शीशा और कुछ औज़ार।

एक बार मेरी घड़ी आग में गिर गई। उसी के हफ्ते भर बाद मुझे नाना के घर जाना था। इसलिए मैंने उस घड़ी को अपने बैग में रख लिया। नाना के घर पहुँचकर मैंने घड़ी उनको दिखाई। वो तुरन्त समझ गए कि ये घड़ी आग में गिर गई है। उन्होंने मुझसे कहा कि इसमें बहुत-सी चीज़ें खराब हो गई हैं। उन्होंने उन मशीनों को बदल दिया।

घड़ी का पट्टा पिघल गया था और उसमें जो प्लास्टिक का था वह भी पिघल गया। शीशे पर धब्बे पड़ गए थे। नाना जी शीशे को जब बदल रहे थे तो वो ठीक से सेट नहीं हो रहा था। अब वो बुड्ढे हो गए हैं। अत: उनमें इतनी ताकत नहीं रही कि वो घड़ी के शीशे को दबाकर उसे उसमें बैठा सकें। इसलिए उन्होंने डाई मशीन का उपयोग किया और शीशा बैठा दिया। मेरी घड़ी फिर से नई हो गई।

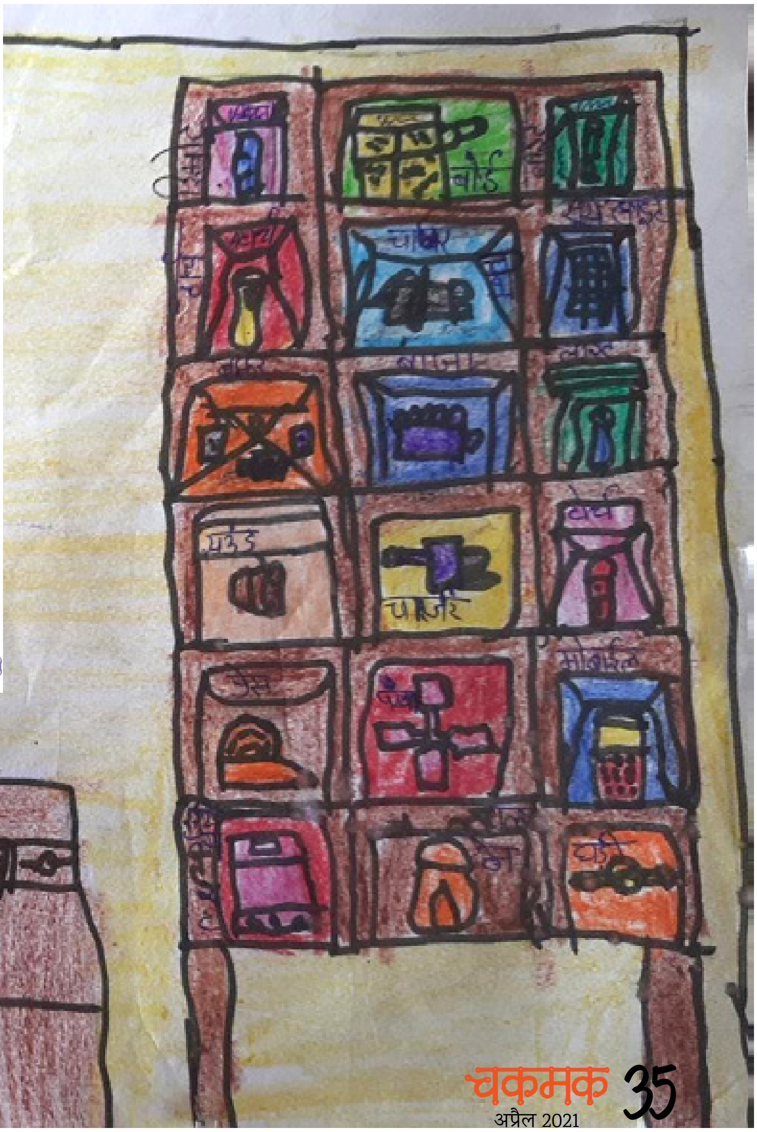

चित्र: समिधा घोरपड़े, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

गाँव की सैर

नील तमर, चौथी, एसडीएमसी स्कूल, हौज़ खास, नई दिल्ली

पिछले दिनों मैं अपने दादा जी के साथ गाँव गया। जैसे ही मैं गाँव के अन्दर पहुँचा मैंने बहुत सारे गन्ने के खेत देखे। मैंने दादा जी से कहा कि मुझे गन्ने खाने हैं। दादा जी ने किसान से कहकर मुझे गन्ना दिलवाया। मैंने उसे छीलकर खाया। बड़ा मज़ा आया।

रास्ते में मैंने सरसों और बाजरे के खेत और बैलगाड़ी भी देखी। गाँव के कच्चे रास्ते पर बहुत मिट्टी उड़ रही थी। जैसे ही मैं घर पहुँचा वैसे ही मैं दादी को देखते ही चिल्लाया और उनसे लिपट गया। दादी ने मुझे बहुत प्यार किया और मेरे लिए भैंस का गरमा-गरम दूध लाईं। फिर हमने आराम किया क्योंकि मैं और दादा जी सफर से थक गए थे।

मेरा पन्ना

अगले दिन सुबह-सुबह मैंने सुना कि कोयल और चिड़िया की आवाज़ आ रही है। हम उठे और तालाब की ओर सैर करने निकल गए। वहाँ मैंने देखा छोटे चाचा मछली पकड़ रहे हैं। मैंने भी एक मछली पकड़ी। मछली जैसे ही बाहर आई तो बहुत उछल रही थी। मैं उसे देखता रहा। हमने बहुत सारी मछली पकड़ी। दादी ने हमारे लिए मछली की सब्ज़ी भी बनाई।

गाँव में मैंने एक कुआँ भी देखा। वह अब बन्द हो गया था। दादी ने बताया कि पहले हम सब पानी वहीं से निकालते थे। अब सरकार ने हैंडपम्प लगवा दिया है। मैंने दादी से पूछा कि आम का पेड़ नहीं दिख रहा है। तो दादी ने कहा कि उसके लिए तुम्हें आम के बाग में जाना होगा। मैं तुरन्त चाचा के साथ गया। वहाँ मैंने बहुत सारे आम तोड़े और ले जाकर दादी को दिए।

दादी ने आधे आम भूसे में दबा दिए। मैंने पूछा कि आपने ये क्या किया। तो उन्होंने कहा कि आम पकने के लिए भूसे में दबा दिए। इससे वह मीठे हो जाएँगे। और दूसरे आम को काटकर धूप में सुखा दिया। कहा कि इससे अचार बनाऊँगी। वो अपनी मम्मी के लिए शहर ले जाना। फिर अगले दिन हमने शहर जाने की तैयारी कर ली।

चित्र: अर्चिता सन्तोष काकरे, छठवीं, ज़िला परिषद स्कूल खडकी, तालुका फलटण, महाराष्ट्र

माथापच्ची

1. यदि

9 = 72

8 = 56

7 = 42

6 = 30

5 = ?

2. A, B और C ब्लॉक्स को नीचे दिए गए बॉक्स में रखे हुए ब्लॉक्स के ऊपर रखना है। तुम ब्लॉक्स को घुमाकर रख सकते हो पर ध्यान रखना कि कोई भी ब्लॉक बॉक्स के बाहर नहीं निकलना चाहिए। तीनों में से कोई एक ब्लॉक इस शर्त को पूरा नहीं करता है। बता सकते हो वह कौन-सा ब्लॉक है?

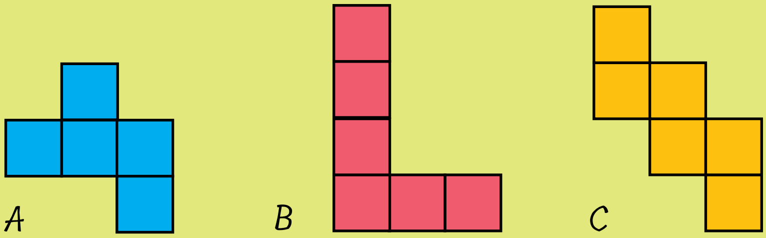

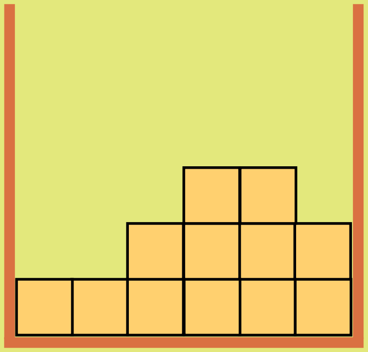

3. 6 को छह बार लिखकर 66 लाना है। कैसे करोगे? तुम जोड़, घटाव, गुणा और भाग का चिह्न इस्तेमाल कर सकते हो।

4. अर्शी एक चौराहे पर पहुँचती है जहाँ से चार अलग-अलग शहरों को रास्ता जाता है। लेकिन वहाँ पर लगा हुआ साइन पोस्ट नीचे गिरा होता है। अब वो सही रास्ता कैसे चुन सकती है?

5. क्या तुम कागज़ से पैन उठाए बिना इस चित्र को कॉपी कर सकते हो?

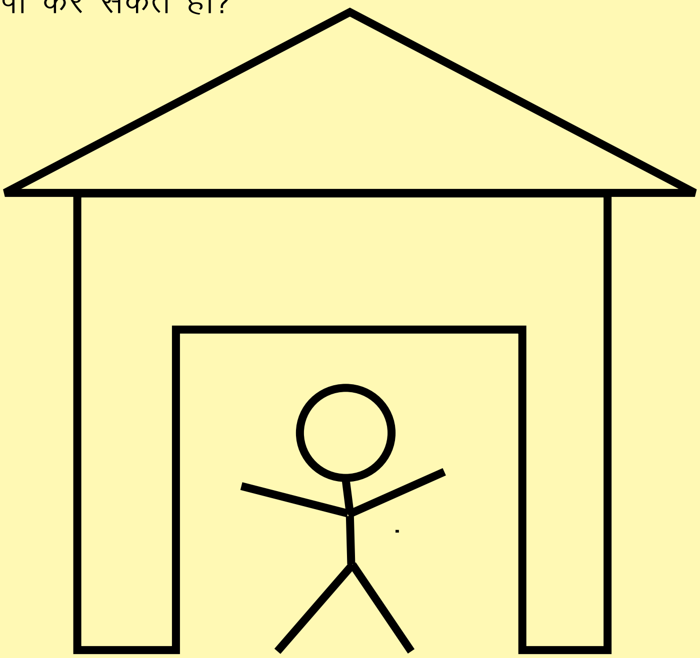

6. अगर कोई व्यक्ति अपने सिर के बल दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके खड़ा होता है तो उसका बायाँ हाथ किस दिशा में होगा?

7. चार दोस्तों को एक प्रोग्राम के लिए जाना है। रास्ते में एक पुल है जिसे उन्हें केवल 17 मिनट में पार करना है। पुल बहुत कमज़ोर है। उससे एक बार में केवल दो ही लोग जा सकते हैं। चारों दोस्तों की चाल भी अलग-अलग है। एक को पुल पार करने में 1 मिनट, दूसरे को 2, तीसरे को 5 और चौथे को 10 मिनट लगते हैं। रात का समय है और उनके पास केवल एक ही टॉर्च है। इसलिए दोनों दोस्तों को धीमी चाल वाले दोस्त की रफ्तार से चलना पड़ेगा। अब वो उलझन में हैं कि 17 मिनट में पुल कैसे पार करें। क्या तुम कुछ मदद कर सकते हो?

8. एक खाली बोतल के अन्दर एक सिक्का है। बोतल के मुँह को कॉर्क से बन्द कर दिया गया है। बोतल को तोड़े बिना और कॉर्क को बाहर निकाले बिना तुम सिक्का कैसे निकालोगे?

9. साहिल ने कहा कि एक व्यक्ति बिना पैराशूट के हवाई जहाज़ से कूद गया। फिर भी उसे खरोंच तक नहीं आई। साहिल झूठ नहीं बोल रहा था। पर यह कैसे हो सकता है?

10. एक सीरियल किलर लोगों का अपहरण करता। फिर उन्हें दो बिलकुल एक जैसी गोलियाँ देता और कहता कि एक सादी गोली है और एक में ज़हर है। तुम दोनों में से कोई भी एक गोली खा सकते हो। जो गोली बचती उसे वह खुद खा लेता। पर वह हर बार बच जाता। वह ऐसा कैसे कर पाता था?

फटाफट बताओ

क्या है जो गर्म करने पर जम जाता है?

([illegible])

क्या है जिसे काटते तो हैं पर उसके टुकड़े नहीं कर सकते?

([illegible])

लकड़ी से बना ऐसा क्या है जिसे आरा मशीन भी नहीं काट सकती?

([illegible])

मैं हूँ तो कटोरे जितनी, पर पूरे समुद्र का पानी भी मुझे भर नहीं सकता। बताओ मैं कौन हूँ?

([illegible])

एक बला ने मुश्किल डाली
जब घर आए, बजती ताली

([illegible])

हरी टोपी काला बाना, सिर पर बैठ शहर को जाना
गली-महल्ले शोर मचाना, भर्ता करके इसको खाना

([illegible])

पढ़ने में लिखने में, दोनों में ही मैं आता काम
पैन नहीं कागज़ नहीं, बताओ क्या है मेरा नाम?

([illegible])

बीच काटकर मली गई, शुरू काटकर छली गई
जल में रहकर सुख भोगा, बाहर आकर तली गई

([illegible])

1 2 3 4
5 6 7
8 9
10 11
12 13 14
15
16 17 18 19
20 21 22
23 24

सुडोकू 41

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

1	2	6	8		4			9
3	9	7		5		4		
4					3	6	7	1
2			7			1		
		5			9			
8			2	3	5	9	4	6
7				8	2		9	4
		2			7	8		
		4				2	1	7

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

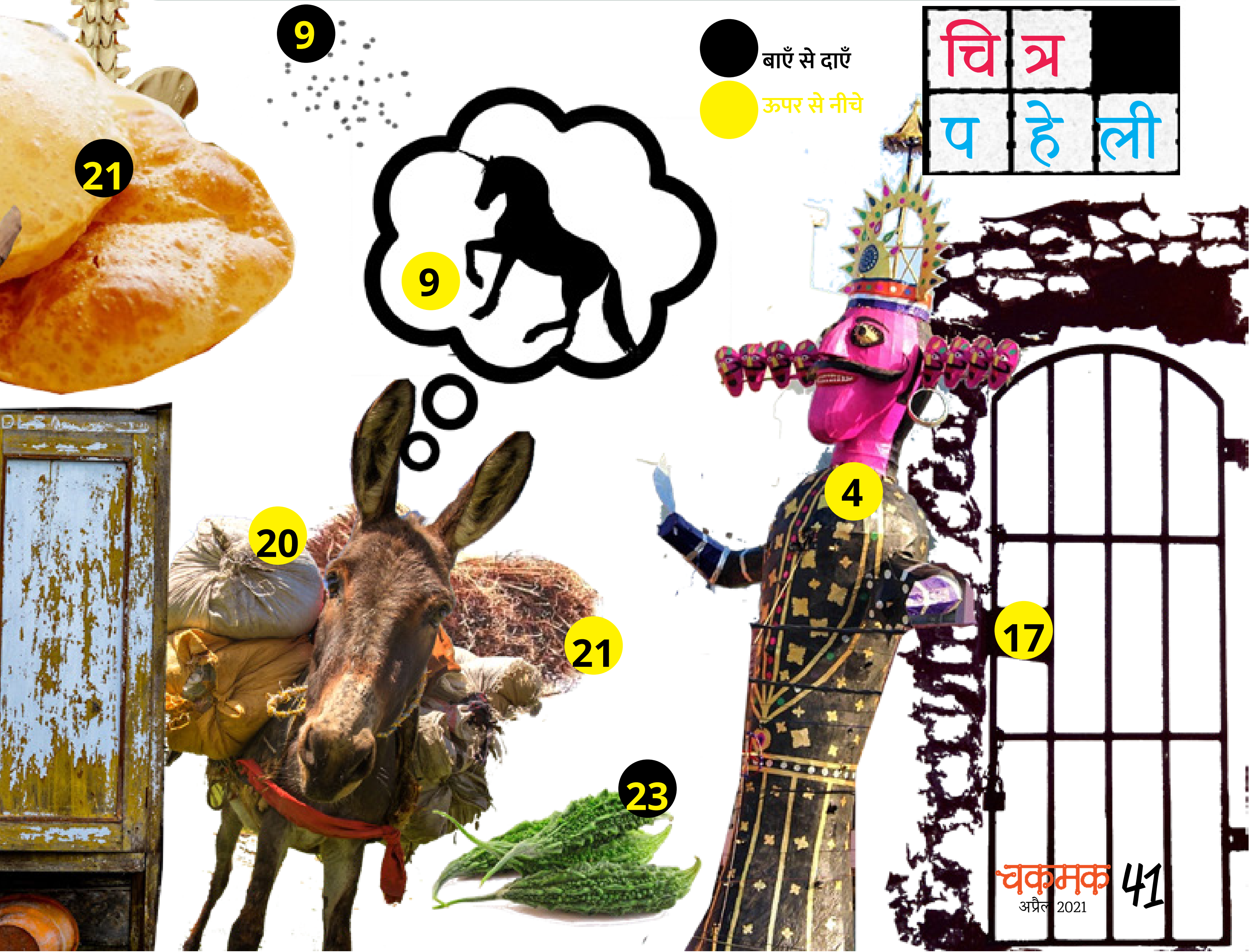

माथापच्ची जवाब

1. इन संख्याओं में यह पैटर्न है:

9 x 9 - 9 = 72

8 x 8 - 8 = 56

7 x 7 - 7 = 42

6 x 6 - 6 = 30

5 x 5 - 5 = 20

2. B ब्लॉक इस शर्त को पूरा नहीं करता। A और C को चित्र में दिखाए अनुसार बॉक्स में रख सकते हैं।

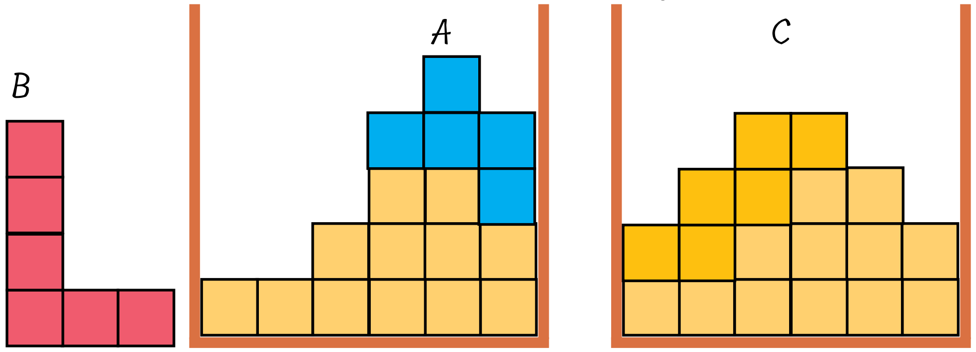

3. दो तरीके इस प्रकार हैं:

66 - 6 + 6 - 6 + 6 = 66

(6 + 6) x 6 + 6 - 6 - 6 = 66

4. अर्शी जिस शहर से आई है उसका नाम तो जानती ही होगी। इसके आधार पर वह साइन पोस्ट को ठीक-से लगा सकती है।

5. घर की आउटलाइन बनाने के बाद, कोने से कागज़ को मोड़ो और इस मुड़े हुए कागज़ से होते हुए लड़के का चित्र बनाओ, इस तरह बिना पैन उठाए पूरा चित्र बन सकता है।

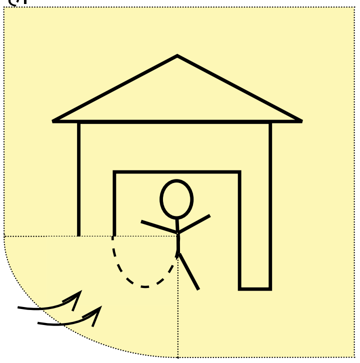

6. सामान्य स्थिति में दक्षिण दिशा में मुँह करके खड़े होने में दायाँ हाथ पश्चिम दिशा में और बायाँ हाथ पूर्व दिशा में होगा जबकि सिर के बल खड़े होने यानी उल्टा होने पर बायाँ हाथ पश्चिम दिशा में होगा।

7. माना कि चारों दोस्त A, B, C व D हैं। वह इस तरह पुल पार कर सकते हैं:

चाल	समय
A व B साथ में टॉर्च लेकर जाएँ	2 मिनट
A टॉर्च लेकर वापिस आए	1 मिनट
C व D टॉर्च लेकर एक साथ जाएँ	10 मिनट
B टॉर्च लेकर वापस आए	2 मिनट
A व B साथ में टॉर्च लेकर जाएँ	2 मिनट

8. कॉर्क को बोतल के अन्दर धकेल दो और सिक्के को निकाल लो।

9. हो सकता है, क्योंकि हवाई जहाज़ उड़ नहीं रहा था।

10. दोनों में से कोई भी गोली ज़हरीली नहीं थी। असल में ज़हर उस गिलास के पानी में था जिसे पीड़ित व्यक्ति दवा के साथ पीता था।

मार्च की चित्रपहेली का जवाब

■	1 रं	■	2 प	र	3 ची	■	4 प	न्ना
5 दा	ग	■	व	■	6 ल	ची	ला	■
म	■	7 म	न	8 का	■	■	9 श	क्ल
10 न	क़ा	शी	■	11 ग	र	12 म	■	■
■	■	13 न	14 मा	ज़	■	15 क	बी	16 ला
17 डं	18 का	■	चि	■	19 बौ	र	■	ल
■	20 लि	बा	स	■	छा	■	21 कॉ	टे
22 पं	ख	■	■	23 स	र	24 सौं	■	न
जा	■	25 आ	स	न	■	26 टा	ल	■

सुडोकू-40 का जवाब

6	9	2	3	8	1	7	4	5
7	5	4	6	2	9	1	3	8
1	3	8	5	7	4	6	2	9
4	1	3	8	9	6	5	7	2
2	8	7	4	3	5	9	6	1
9	6	5	2	1	7	4	8	3
3	7	9	1	6	8	2	5	4
8	4	6	9	5	2	3	1	7
5	2	1	7	4	3	8	9	6

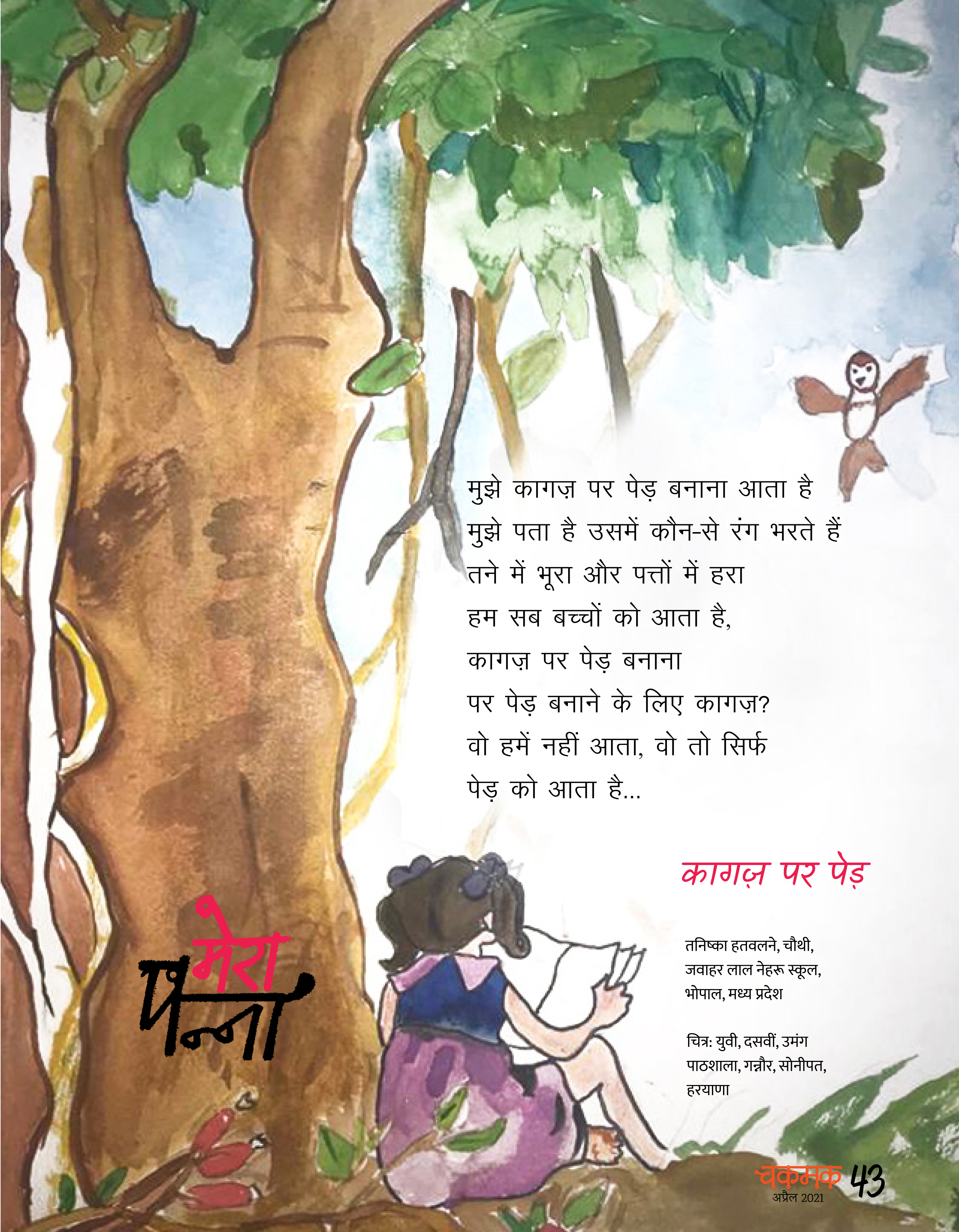

मेरा पन्ना

कागज़ पर पेड़

मुझे कागज़ पर पेड़ बनाना आता है
मुझे पता है उसमें कौन-से रंग भरते हैं
तने में भूरा और पत्तों में हरा
हम सब बच्चों को आता है,
कागज़ पर पेड़ बनाना
पर पेड़ बनाने के लिए कागज़?
वो हमें नहीं आता, वो तो सिर्फ
पेड़ को आता है...

तनिष्का हतवलने, चौथी,
जवाहर लाल नेहरू स्कूल,
भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: युवी, दसवीं, उमंग पाठशाला, गन्नौर, सोनीपत, हरयाणा

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

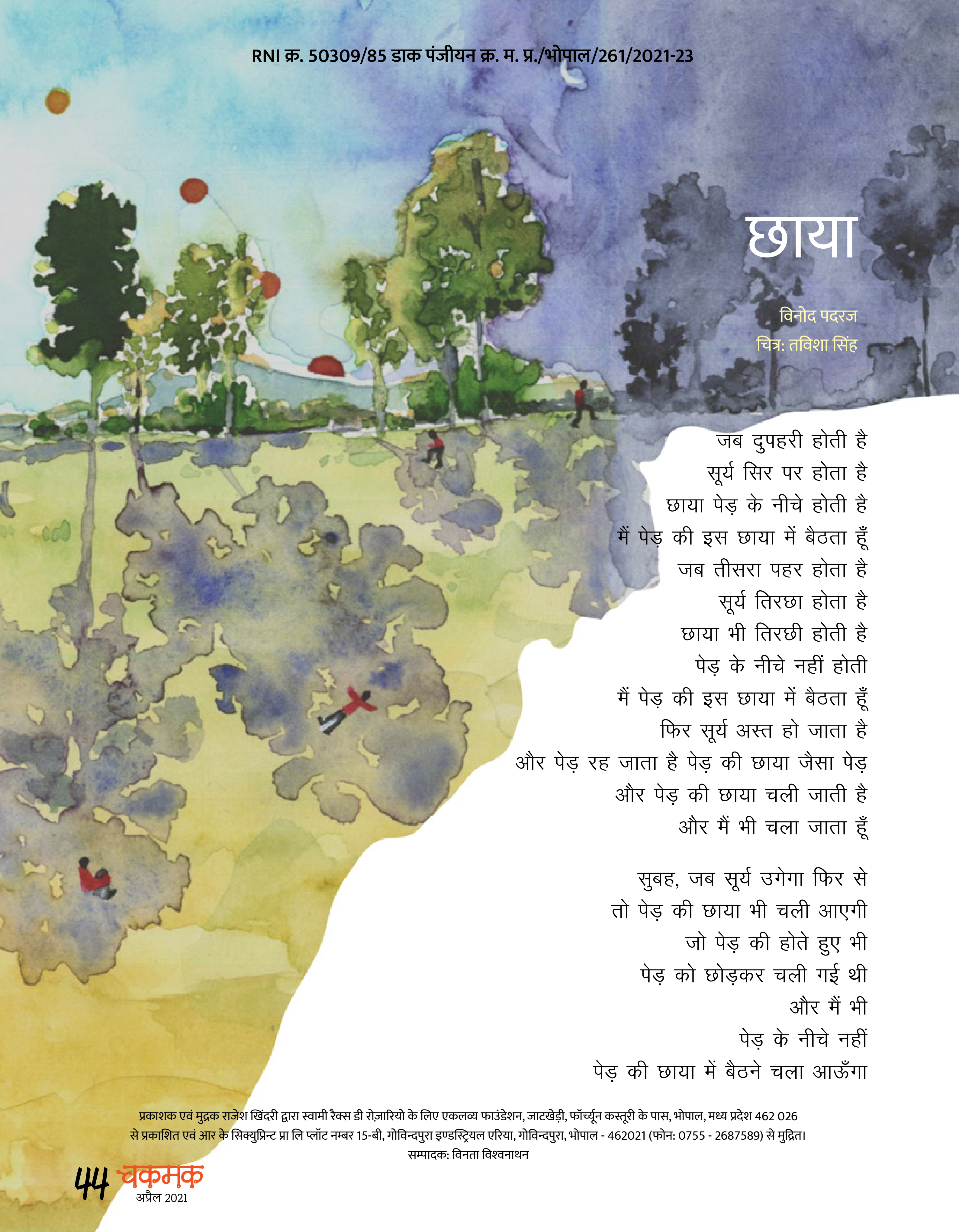

छाया

विनोद पदरज
चित्र: तविशा सिंह

जब दुपहरी होती है
सूर्य सिर पर होता है
छाया पेड़ के नीचे होती है
मैं पेड़ की इस छाया में बैठता हूँ
जब तीसरा पहर होता है
सूर्य तिरछा होता है
छाया भी तिरछी होती है
पेड़ के नीचे नहीं होती
मैं पेड़ की इस छाया में बैठता हूँ
फिर सूर्य अस्त हो जाता है
और पेड़ रह जाता है पेड़ की छाया जैसा पेड़
और पेड़ की छाया चली जाती है
और मैं भी चला जाता हूँ

सुबह, जब सूर्य उगेगा फिर से
तो पेड़ की छाया भी चली आएगी
जो पेड़ की होते हुए भी
पेड़ को छोड़कर चली गई थी
और मैं भी
पेड़ के नीचे नहीं
पेड़ की छाया में बैठने चला आऊँगा

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन